www.deshkiupasana.com
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
RNI NO - UPHIN/2022/86937
जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

DKU LIVE
सब पर नज़र, सबकी ख़बर

वर्ष – 05 | अंक – 31 | जौनपुर, बुधवार, 16 सितम्बर 2026 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य – 2 रूपये

कर्मठ और विद्वान व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ती समृद्धि - प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर 'सुभाषितम' साझा किया। इसमें उन्होंने महाभारत के शान्तिपर्व के एक श्लोक के माध्यम से कर्मठ, शूरवीर, धैर्यवान और विद्वान व्यक्ति के जीवन में समृद्धि के महत्व को बताया। पीएम नरेंद्र मोदी ने महाभारत के शान्तिपर्व का श्लोक, "अद्वैधमनसं युक्तं शूरं धीरं विपश्चितम्। न श्रीः सन्त्यजते नित्यमादित्यमिव रश्मयःध" साझा किया। इसका हिंदी अर्थ है कि जिस व्यक्ति का मन दुविधारहित हो और जो कर्मठ, शूरवीर, धैर्यवान तथा विद्वान हो, समृद्धि उसका साथ कभी नहीं छोड़ती, जैसे सूर्य का साथ उसकी किरणें कभी नहीं छोड़तीं। श्लोक में 'अद्वैधमनसं' का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिसका मन दुविधा में न हो और जो पूरी तरह एकाग्र तथा दृढ़ निश्चयी हो। 'युक्तं' का अर्थ है संयमी, अनुशासित और अपने काम में हमेशा लगा रहने वाला व्यक्ति। 'शूरं' का अर्थ वीर और पराक्रमी, जबकि 'धीरं' का अर्थ धैर्यवान और संकट के समय विचलित न होने वाला व्यक्ति है। 'विपश्चितम्' का अर्थ विद्वान, बुद्धिमान और शास्त्र का ज्ञाता है। 'न श्रीः सन्त्यजते नित्यम' का अर्थ है कि श्री यानी लक्ष्मी या समृद्धि ऐसे व्यक्ति का साथ कभी नहीं छोड़ती। वहीं, 'आदित्यमिव रश्मयः' का अर्थ है कि जैसे सूर्य को उसकी किरणें कभी नहीं छोड़तीं, उसी तरह कर्मठ, वीर, धैर्यवान और विद्वान व्यक्ति से समृद्धि जुड़ी रहती है। प्रधानमंत्री मोदी ने 11 सितंबर को भी 'सुभाषितम' साझा किया था। उन्होंने लिखा था, "चातुर्वर्ण्यस्य धर्माश्च रक्षितव्या महीक्षिता। धर्मसंकररक्षा च राज्ञां धर्मरू सनातन"। इसका हिंदी अर्थ बताया गया था कि जनप्रतिनिधि का कर्तव्य सेवा, समर्पण और कुशल नेतृत्व के माध्यम से समाज के सभी वर्गों में न्याय, समरसता और लोककल्याण को बढ़ावा देना तथा सामाजिक व्यवस्था में नैतिक मूल्यों और धर्म की रक्षा करना है। इससे पहले 10 जून को पीएम मोदी ने संस्कृत श्लोक, "सदानुरक्तप्रकृतिः प्रजापालनतत्परः। विनीतात्मा हि नृपतिर्भूयसी श्रियमश्नुतेध" साझा किया था। इसका हिंदी अर्थ था कि जो जनप्रतिनिधि सेवा को अपना धर्म मानकर निरंतर जनहित में कार्य करता है, सुशासन के जरिए जनता की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करता है

विदेश मंत्री एस. जयशंकर 16–17 सितंबर को भूटान की आधिकारिक यात्रा पर जाएंगे

नई दिल्ली, (एजेंसी)। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर, भूटान के विदेश एवं विदेश व्यापार मंत्री महामहिम ल्योनपो डी.एन. ढुंग्येल के निमंत्रण पर 16–17 सितंबर 2026 को भूटान की आधिकारिक यात्रा करेंगे। यात्रा के दौरान विदेश मंत्री भूटान के विदेश मंत्री के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। उन्हें भूटान के महामहिम राजा से शाही मुलाकात का अवसर

मिलेगा और वह भूटान के प्रधानमंत्री से भी मुलाकात करेंगे। यह यात्रा भारत और भूटान के बीच नियमित उच्चस्तरीय आदान–प्रदान की परंपरा के अनुरूप है और दोनों देशों के बीच मौजूदा घनिष्ठ मित्रता एवं सहयोग के संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

संक्षिप्त खबरें

एमडीआर से भारत के डिजिटल पेमेंट इकोसिस्टम की सस्टेनेबिलिटी को बढ़ावा मिलेगा – आरबीआई

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने मंगलवार को कहा कि ज्यादा वैल्यू वाले यूपीआई ट्रांजेक्शन पर एमडीआर लागू करना भारत के डिजिटल पेमेंट इकोसिस्टम की लंबे समय की स्थिरता को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम है।प्रवासी नेटवर्क जुड़ें सेंट्रल बैंक ने एक बयान में कहा कि इससे यूपीआई को देशभर में ग्राहकों और व्यवसायों के लिए अपना दायरा बढ़ाने, नई सुविधाएं लाने और सेवाएं जारी रखने में मदद मिलेगी।आरबीआई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश पर पोस्ट कर कहा, छ्इकोसिस्टम में शामिल लोगों के बीच एमडीआर का सही और उचित बंटवारा टेक्नोलॉजी, इंफ्रास्ट्रक्चर और एक्सेप्टेंस नेटवर्क में लगातार निवेश को बढ़ावा देगा। इससे यूपीआई को ज्यादा जगहों पर स्वीकार किया जा सकेगा, ग्राहकों की संख्या बढ़ेगी और ट्रांजेक्शन की संख्या में लगातार बढ़ोतरी होगी।ष्खास बात यह है कि सभी यूपीआई ट्रांजेक्शन –पी2पी और पी2एम– यूजर्स के लिए मुफ्त रहेंगे। मर्चेंट्स के लिए 2,000 रुपए से कम के पी2एम यूपीआई ट्रांजेक्शन मुफ्त रहेंगे, जबकि पी2एम के लिए मर्चेंट्स पर एमडीआर लगाया जा सकता है। आरबीआई ने कहा कि वह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि यूपीआई सुरक्षित, आसान, सस्ता और सभी की पहुंच में बना रहे। साथ ही भारत के वर्ल्ड–क्लास डिजिटल पेमेंट इकोसिस्टम की लंबी अवधि की स्थिरता और विकास को भी बढ़ावा दे। नए यूपीआई फ्रेमवर्क का पर्सन–टू–पर्सन (एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच) ट्रांजेक्शन पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

कलकत्ता हाई कोर्ट ने सीसीटीवी फुटेज सुरक्षित रखने का निर्देश दिया

कोलकाता, (एजेंसी)। कलकत्ता हाई कोर्ट ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल पुलिस को निर्देश दिया कि वे उस एनकाउंटर से जुड़े सीसीटीवी फुटेज को सुरक्षित रखें जिसमें प्रवाश मंडल मारा गया था। प्रवाश मंडल इस साल जुलाई में दक्षिण 24 परगना जिले के बारुईपुर में एक नाबालिग लड़की के साथ रेप और उसकी हत्या के मामले में मुख्य आरोपी था। जस्टिस अरिजीत बनर्जी और रीतोब्रतो कुमार मित्रा की डिवीजन बेंच ने इस मामले में चल रही जांच प्रक्रिया को जल्द पूरा करने का भी निर्देश दिया।इस मामले में अगली सुनवाई तीन हफ्ते बाद होगी, और बेंच के आदेश के अनुसार, तब तक जांच प्रक्रिया पूरी हो जानी चाहिए। इस साल जुलाई में, साउथ 24 परगना के बारुईपुर पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आने वाले सूर्यपुर इलाके से एक नाबालिग लड़की लापता हो गई थी। बाद में, उसका शव एक तालाब से बैग में मिला। इसके बाद, स्थानीय लोगों के एक समूह के हिंसक विरोध–प्रदर्शन के कारण बारुईपुर में काफी समय तक तनावपूर्ण स्थिति बनी रहीय इस दौरान एक बेगुनाह युवक की पीट–पीटकर हत्या भी कर दी गई थी।पुलिस ने चार लोगों, प्रवास मंडल, दिवाकर सरदार, आनंद सरदार और कबीर मोल्ला, को गिरफ्तार किया।

आरएसएस की सेवा की सदी भारत की सेवा परंपरा को दर्शाती है – उपराष्ट्रपति

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने मंगलवार को नई दिल्ली स्थित उपराष्ट्रपति भवन में तेलंगाना की पूर्व राज्यपाल और पुडुचेरी की पूर्व उपराज्यपाल डॉ. तमिलिसाई सौंदर्यराजन द्वारा लिखित पुस्तक "ए सेंचुरी ऑफ सर्विस दृ द आरएसएस इन 100 एक्ट्स ऑफ सेवा" का विमोचन किया। यह पुस्तक आरएसएस की सेवा की शताब्दी के अवसर पर लिखी गई है। आरएसएस की सेवा और सामाजिक

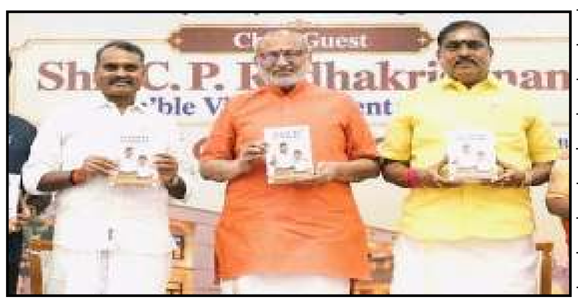

जिम्मेदारी को दर्ज करती है पुस्तक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि यह पुस्तक आरएसएस की सौ साल की सेवा, उसकी सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्र–निर्माण में उसके योगदान को दर्ज करती है। उन्होंने कहा कि पुस्तक में सेवा के माध्यम से सामाजिक कार्यों में योगदान की यात्रा को सामने रखा गया है। सी. पी. राधाकृष्णन ने कहा कि "आज की खबर कल का इतिहास बन जाती है।" उन्होंने अच्छे कार्यों को दर्ज करने के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि ऐसा नहीं होने पर वे लोगों की स्मृतियों से मिट सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक दर्शाती है कि कैसे सेवा की भावना लगातार सामाजिक सेवा में बदल गई है। "सेवा ही धर्म है, यह एक कर्तव्य है" को बुनियादी आदर्श बताते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि आरएसएस की सेवा पहल समाज के गरीब, हाशिए पर रहने वाले और विभिन्न वर्गों तक पहुंची है। इनमें मजदूर, महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं।

यूसीसी पर अमित शाह के ऐलान से बढ़ी हलचल, 21 राज्यों में लागू करने की तैयारी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 13 सितंबर 2026 को मुंबई में कहा कि 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए शासित सभी 21 राज्यों में समान नागरिक संहिता यानी यूसीसी लागू कर दी जाएगी। उनका बयान ऐसे समय आया है जब उत्तराखंड में यूसीसी लागू हो चुका है, जबकि गुजरात, असम और मध्य प्रदेश इस दिशा में आगे बढ़ चुके हैं। हालांकि, पूरे देश में एक साथ यूसीसीलागू करने के रास्ते में संवैधानिक और राजनीतिक दोनों तरह की चुनौतियां हैं। समान नागरिक संहिता का संवैधानिक आधार अनुच्छेद 44 में मिलता है। इसमें राज्य को पूरे देश में नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता हासिल करने का प्रयास करने की बात कही गई है। हालांकि, यह

राज्य के नीति निदेशक तत्वों का हिस्सा है और अनुच्छेद 37 के तहत इसे अदालत के जरिए सीधे लागू नहीं कराया जा सकता। शादी, तलाक, गोद लेने, भरण–पोषण और उत्तराधिकार जैसे विषय समवर्ती सूची में आते हैं, इसलिए इन पर केंद्र और राज्य दोनों कानून बना सकते हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कानून बनाने के बजाय भाजपा अब राज्य–दर–राज्य यूसीसी लागू करने की रणनीति पर आगे बढ़ रही है। उत्तराखंड ने फरवरी 2024 में यूसीसी कानून पास किया और जनवरी 2025 से इसे लागू कर दिया। गुजरात ने मार्च 2026 में यूसीसी विधेयक पास किया। असम ने मई 2026 में ऐसा करने वाला पहला पूर्वोत्तर राज्य बनने का दावा किया, जबकि मध्य प्रदेश ने जुलाई 2026 में यूसीसी लागू किया। हालांकि, गुजरात, असम और मध्य प्रदेश में अंतिम कानूनी प्रक्रिया के अलग–अलग चरण बाकी बताए गए हैं। यूसीसी को लेकर सबसे अहम सवाल जनजातीय समुदायों और अनुसूचित क्षेत्रों को लेकर है। असम में अनुसूचित जनजातियों को यूसीसी के दायरे से बाहर रखा गया है। छठी और पांचवीं अनुसूची वाले क्षेत्रों में भी विशेष संवैधानिक प्रावधान लागू हैं।

रेल मंत्री ने चार गति शक्ति कार्गो टर्मिनल देश को किए समर्पित, लिंच जीसीटी की रखी आधारशिला

नई दिल्ली, (एजेंसी)। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को गुजरात में चार गति शक्ति कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) देश को समर्पित किए और मेहसाणा के लिंच में पांचवें जीसीटी की आधारशिला रखी। उन्होंने शिवलाखा जीसीटी से मीठापुर के लिए नमक से लदी मालगाड़ी को भी हरी झंडी दिखाई। इन टर्मिनलों से राज्य की माल ढुलाई क्षमता बढ़ेगी, कार्गो की तेज आवाजाही में मदद मिलेगी और क्षेत्रीय आर्थिक केंद्रों को राष्ट्रीय बाजारों तथा बंदरगाहों से बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी। पांच जीसीटी में से कच्छ के शिवलाखा और भीमसार, मोरबी के देवलिया तथा बनासकांठा के चंदिसर स्थित जीसीटी को राष्ट्र को समर्पित किया गया। मेहसाणा के लिंच में जीसीटी की आधारशिला रखी गई। ये टर्मिनल माल ढुलाई के लिए रेल क्षमता बढ़ाने, बंदरगाहों पर भीड़ और रुकावट कम करने तथा गुजरात के

बंदरगाहों और उत्तरी अंदरूनी इलाकों के बीच माल ढुलाई संपर्क मजबूत करने में मदद करेंगे। नए टर्मिनल स्थानीय आर्थिक केंद्रों को बड़े राष्ट्रीय बाजारों और बंदरगाहों से जोड़ेंगे। इससे क्षेत्र में बढ़ती औद्योगिक, व्यापारिक और व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलने के साथ रसद लागत कम करने और माल की आवाजाही को अधिक सुगम बनाने में मदद मिलेगी। शिवलाखा जीसीटी से मीठापुर के लिए नमक से लदी मालगाड़ी को हरी झंडी दिखाते हुए अश्विनी वैष्णव ने कहा कि गुजरात, खासकर कच्छ, नमक का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है। देश के विभिन्न हिस्सों तक नमक पहुंचाने में पारंपरिक रूप से कई चुनौतियां रही हैं। उन्होंने कहा कि नमक आवश्यक सामग्री है और गरीब तथा मध्यम वर्गीय परिवारों समेत हर घर में इसका इस्तेमाल होता है। रेल मंत्री ने बताया कि पारंपरिक रेलवे वैगनों से नमक के परिवहन में वैगन के अपने वजन के कारण माल ढुलाई की क्षमता प्रभावित होती थी। इसके अलावा नमक नमी सोख लेता है, जिससे परिवहन के दौरान माल गीला होने और लोडिंग–अनलोडिंग में कठिनाई की समस्या आती थी। उन्होंने कहा कि नया हल्के वजन वाला स्टेनलेस स्टील सॉल्ट कंटेनर इन चुनौतियों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है।

वित्त मंत्री सीतारमण ने छात्रों को दी सलाह, 'विनम्रता और जिम्मेदारी की मजबूत भावना विकसित करना जरूरी'

नई दिल्ली, (एजेंसी)। तमिलनाडु के चेन्नई में एमजीआर विश्वविद्यालय में छात्रों को संबोधित करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि छात्रों को विनम्रता और जिम्मेदारी की मजबूत भावना विकसित करनी चाहिए। उन्होंने प्रसिद्ध विद्वान सर आइजैक न्यूटन का उदाहरण देते हुए कहा कि न्यूटन ने अपनी सफलता में अन्य विद्वानों के योगदान को स्वीकार किया था। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि न्यूटन जैसे महान विद्वान ने भी स्वीकार किया था कि अपनी सफलता हासिल करने और खोजें करने के लिए उन्हें कई अन्य विद्वानों की सहायता की आवश्यकता थी। केंद्रीय मंत्री ने कहा, "न्यूटन जैसे महान विद्वान ने स्वीकार किया था कि अपनी सफलता हासिल करने के लिए उन्हें विभिन्न विद्वानों की सहायता की आवश्यकता थी। उन्होंने कहा था कि इसी सहयोग के माध्यम से वह अपनी विभिन्न खोजें कर पाए। उन्होंने इसे बेहद विनम्रता के साथ व्यक्त किया।" वित्त मंत्री ने कहा, "इसलिए छात्रों के लिए विनम्रता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करना बेहद महत्वपूर्ण है।" उन्होंने कहा कि न्यूटन द्वारा दूसरों के योगदान को स्वीकार करना उनकी गहरी

विनम्रता को दर्शाता है और यह बताता है कि किसी व्यक्ति की उपलब्धियों में दूसरों के योगदान को पहचानना कितना महत्वपूर्ण है। वित्त मंत्री ने छात्रों से इस दृष्टिकोण से प्रेरणा लेने और अपनी शैक्षणिक तथा पेशेवर यात्रा के साथ–साथ विनम्रता विकसित करने का आग्रह किया। उन्होंने जोर दिया कि व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में जिम्मेदारी की भावना भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनी रहनी चाहिए। वित्त मंत्री ने कहा, "न्यूटन जैसे प्रतिष्ठित विद्वान ने अपने भाषण में कहा था कि उन्हें अपनी सफलता के लिए विभिन्न विद्वानों की मदद की जरूरत पड़ी।

मनोहर लाल ने जी20 ऊर्जा प्रचुरता मंत्रिस्तरीय बैठक में लिया हिस्सा, अमेरिका और कनाडा के साथ की द्विपक्षीय बैठक

नई दिल्ली, (एजेंसी)। केंद्रीय विद्युत, आवास और शहरी मामलों के मंत्री मनोहर लाल ने 15 सितंबर 2026 को ह्यूस्टन में आयोजित जी20 ऊर्जा प्रचुरता कार्य समूह की बैठकों में हिस्सा लिया। उन्होंने समूह–1 और समूह–2 के तहत अपने विचार प्रस्तुत किए और ऊर्जा सहयोग को मजबूत करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा के वरिष्ठ नेताओं के साथ द्विपक्षीय चर्चा की। मनोहर लाल ने सुरक्षित और सुदृढ़ ऊर्जा प्रणाली के निर्माण में भारत की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने 552 गीगावाट की स्थापित क्षमता, 50ः से अधिक गैर–जीवाश्म ऊर्जा की हिस्सेदारी तथा सौर ऊर्जा, भंडारण, परमाणु ऊर्जा और स्वच्छ खाना पकाने की सुविधा के क्षेत्र में हुई महत्वपूर्ण प्रगति का उल्लेख किया। उन्होंने प्रौद्योगिकी–तटस्थ और समावेशी ऊर्जा मार्गों तथा अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए), ओसोवोग और ग्लोबल बायोफ्यूल्स एलायंस के माध्यम से वैश्विक सहयोग के प्रति भारत की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। समूह–2 के सत्र में मनोहर लाल ने राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली, परिवेश और प्रधानमंत्री गति शक्ति जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से अनुमोदन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने और नियामक पूर्वानुमान को मजबूत करने के लिए भारत द्वारा किए जा रहे सुधारों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने समय पर अवसंरचना विकास के लिए कुशल अनुमति प्रक्रिया को आवश्यक बताया और क्षमता निर्माण तथा नियामक आधुनिकीकरण में जी20 सहयोग बढ़ाने का आह्वान किया। केंद्रीय मंत्री ने अमेरिकी ऊर्जा विभाग के मंत्री क्रिस राइट से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उच्च–प्रदर्शन कंप्यूटिंग और डेटा केंद्रों के लिए भारत की विद्युत अवसंरचना योजनाओं के साथ–साथ भारत की परमाणु विस्तार योजना पर चर्चा की। दोनों पक्षों ने स्वच्छ ऊर्जा, सुदृढ़ अवसंरचना और उभरती प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अमेरिका–भारत ऊर्जा सुरक्षा साझेदारी के तहत सहयोग की प्राथमिकताओं की पुष्टि की। मनोहर लाल ने कनाडा के ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधन मंत्री के संसदीय सचिव कोरी होगन से भी मुलाकात की।

कदैला हत्याकांड में घायल पार्वती देवी की भी हुई मौत, अब तक छह हो चुके गिरफ्तार

फरार आरोपियों पर घोषित हुआ है 25–25 हजार का इनाम

(डाक्टर अजय तिवारी
जिला संवाददाता)

अयोध्या।जिले के थाना पूराकलंदर क्षेत्र के कंदैला गांव में हुए चर्चित राम लगन मौर्य हत्याकांड में गंभीर रूप से घायल उनकी मां पार्वती देवी की इलाज के दौरान मौत हो गई।पार्वती देवी घटना के समय अपने बेटे के साथ बाइक पर सवार थीं और हमलावरों के बम व गोली से किए गए हमले में गंभीर रूप से घायल हुई थीं।जानकारी के मुताबिक, 25 अगस्त को कंदैला गांव में भूमि विवाद की पुरानी रंजिश

को लेकर राम लगन मौर्य पर हमला किया गया था।हमलावरों ने पहले बम से हमला किया और इसके बाद गोलीबारी की।गोली लगने से राम लगन मौर्य की मौत घटना के समय ही हो गई थी,जबकि उनकी मां पार्वती देवी गंभीर रूप से घायल हो गई थीं।घटना के बाद पार्वती देवी को गंभीर हालत में उपचार के लिए लखनऊ रेफर किया गया था।लखनऊ मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान पार्वती की मौत हो गई।राम लगन मौर्य हत्याकांड की जांच में पुलिस ने राजमणि सिंह उर्फ राज सिंह, दीपक प्रजापति, मनीष शर्मा, सचिन उपाध्याय और प्रांजल सिंह समेत छह को गिरफ्तार किया था।मामले में नामजद छह लोगों में से अभी फरार चल रहे तीन लोगों की गिरफ्तारी के लिए एसएसपी ने 25–25 हजार रुपए का इनाम घोषित किया है।पुलिस के मुताबिक अन्य आरोपियों की तलाश कराई जा रही है।

संपादकीय

पर्वतारोहण से कमाई के फेर में नेपाल

पर्वतारोहण रोमांचक शौक है, जो जोखिम और खतरों के बीच परवान चढ़ता है। पर्वतारोहण संकल्प से सिद्धि की जीवटभरी गाथा है। तेनजिंग नोर्के और एडमंड हिलेरी को अमरत्व इसी पर्वतारोहण की देन है। पर्वतारोहण मनुष्य के साहस के लिये चुनौती है और जान जाने के डर के बावजूद मनुष्य है कि पहाड़ों पर चढ़ने से बाज नहीं आता। विश्व में दस में से आठ सर्वोच्च शिखर भारत के पड़ोसी देश नेपाल में हैं। इनमें सर्वोच्चतम है कि एवरेस्ट यानि सागरमाथा। पर्वतारोहण में शेरपाओं की कुशलता की दुनिया कायल है। पर्वतारोहण का ताजा और रोचक प्रसंग यह है कि पर्वतीय राष्ट्र नेपाल पर्वतारोहण से कमाई के फेर में पड़ गया है। यह खबर ज्यादा पुरानी नहीं, बल्कि पिछले साल की है। गत वर्ष 12 अगस्त को खबर आई थी कि नेपाल पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये पर्वतारोहण का सहारा लगा। अपनी इस नयी नीति के तहत उसने आगामी दो वर्षों के लिये दूरदराज के इलाकों में हिमालय की 97 चोटियों पर चढ़ाई को मुफ्त करने की बात कही थी, लेकिन तुर्रा यह कि उसी साल सितंबर से नगाधिराज हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर पीक सीजन में चढ़ाई के लिये परमिट फीस बढ़ाकर 15000 डालर कर दी गयी थी। गौरतलब है कि पर्वतारोहण नेपाल के लिये विदेशी मुद्रा कमाने का बड़ा जरिया है। पिछले साल पर्वतारोहण से उसे 5.9 मिलियन डालर की कमाई हुई थी। इसमें तीन–चौथाई से अधिक योगदान माउंट एवरेस्ट का था। सन 2024 में एवरेस्ट पर चढ़ाई के लिये चार सौ से भी अधिक परमिट जारी किये गये थे। कह सकते हैं कि हिमाच्छादित एवरेस्ट को पर्वतारोहियों की भीड़ का सामना करना पड़ रहा है, जिसका उसकी सेहत पर बुरा असर पड़ रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि 8849 मीटर से अधिक ऊंची चोटी एवरेस्ट हाल के सालों में भीड़भाड़, पर्यावरण से जुड़ी चिंताओं और चढ़ाई के दम्यान कई जानलेवा हादसों से जूझ रही है। अप्रैल, सन 2024 में नेपाल की सर्वोच्च न्यायालय ने नेपाल सरकार को एवरेस्ट और अन्य अनेक चोटियों के लिये जारी किये जाने वाले परमिटों की संख्या सीमित करने का आदेश दिया था। कोर्ट ने स्पष्ट कहा था कि पहाड़ों की क्षमता का सम्मान किया जाना चाहिये, लेकिन पहाड़ों से कमाई के चस्के के फेर में सरकार के कानों पर जूँ नहीं रेंगी। फलतरू उसने सुप्रीम कोर्ट के परवाने को बलाये ताक रखकर परमिट काटना बदस्तूर जारी रखा। उसने इनकम जेनरेट करने की तालिका बनाई। तदनुसार अप्रैल–मई के मुख्य सीजन के अलावा शेष अवधि में जो आरोहण के इच्छुक हैं, उनके लिये सितंबर से नवंबर के बीच एवरेस्ट चढ़ाई की फीस 7500 डालर और और दिसंबर से फरवरी के मध्य 3750 डालर तय कर दी। दिसंबर, 25 तक सभी रास्तों से एवरेस्ट पर 13737 बार चढ़ाई हुई इसमें 6656 क्लायंट और 7081 क्लाइंबर शामिल थे। सफलता की दर 50 प्रतिशत से भी कम रही। लोकप्रिय दक्खिनी रास्ते पर सबसे ज्यादा मौतें हुई। नेपाल की तरफ जिन 116 पर्वतारोहियों की मृत्यु हुई, उनमें 51 फीसद वे लोग थे, जो एक्स्ट्रा आक्सीजन का इस्तेमाल नहीं कर रहे थे। तिब्बत की तरफ ऐसी 41 मौतें हुई। सन 2000 के बाद से एवरेस्ट पर चढ़ने वालो की संख्या में जबदस्त उछाल आया है। इससे एवरेस्ट प्रदूषण की गिरफ्त में है। सैलानियों और पर्वतारोहियों द्वारा छोड़े गये हजारों किलो कचरे, प्लास्टिक, आक्सीजन सिलेंडरों और मानव अपशिष्ट के कारण इसे दुनिया का सबसे ऊंचा कचरा घर कहा जाने लगा है।

डिजिटल युग और एआई में हिंदीरू चुनौती या नया अवसर

डॉ. आरती पाठक

21वीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) की सदी है। एक दौर था जब तकनीक और इंटरनेट की दुनिया में अंग्रेजी का एकछत्र राज माना जाता था और यह आशंका जताई जाती थी कि डिजिटल क्रांति भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी को हाशिए पर धकेल देगी। परंतु आज परिदृश्य इसके ठीक उलट है। डिजिटल युग और एआई के इस दौर में हिंदी न केवल अपनी उपस्थिति मजबूती से दर्ज करा रही है, बल्कि विकास के नए आयाम भी तलाश रही है। ऐसे में यह सवाल बेहद प्रासंगिक हो जाता है कि क्या यह दौर हिंदी के अस्तित्व के सामने कोई संकट खड़ा कर रहा है या फिर यह उसकी प्रगति का एक ऐतिहासिक अवसर है?

निरूसंदेह, तकनीक के शुरुआती दौर में हिंदी के सामने चुनौतियाँ कम नहीं थीं। इंटरनेट की बुनियाद और कोडिंग मुख्य रूप से रोमन लिपि पर केंद्रित थी। देवनागरी लिपि के लिए मानक फॉन्ट और सहज कीबोर्ड का न होना एक बड़ी तकनीकी बाधा थी। इसके अलावा, एआई आधारित मॉडलों को प्रशिक्षित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले डिजिटल डेटासेट की आवश्यकता होती है। इंटरनेट पर मानक और शुद्ध हिंदी सामग्री की सीमित उपलब्धता के कारण शुरुआती वॉयस असिस्टेंट और अनुवाद टूल्स कई बार भाषा के व्याकरण और संदर्भ को सही ढंग से नहीं पकड़ पाते थे। हालाँकि, जैसे–जैसे तकनीक का प्रसार भारत के छोटे शहरों और ग्रामीण अंचलों तक हुआ, डिजिटल परिदृश्य पूरी तरह बदल गया। टेक कंपनियों को यह समझने में देर नहीं लगी कि भारत का असली और विशाल बाजार गैर–अंग्रेजी भाषी आबादी में बसता है। आज गूगल, यूट्यूब और विभिन्न सोशल मीडिया मंचों पर सबसे अधिक खोज और कंटेंट की खपत हिंदी में हो रही है। एआई और वॉयस टेक्नोलॉजी ने तो साक्षरता और भाषा के बीच की दूरी को ही मिटा दिया है। शगूगल असिस्टेंटश या शएलेक्साश जैसे टूल्स की मदद से जो लोग लिखना या टाइप करना नहीं जानते, वे भी केवल अपनी आवाज के बल पर जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। इसने हिंदी भाषी आम जनमानस के लिए सूचना और ज्ञान का अधिकार वास्तव में सुलभ बना दिया है। इसी प्रकार, एआई आधारित न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन ने दुनिया भर के ज्ञान–विज्ञान, चिकित्सा, विधि और प्रशासनिक साहित्य को हिंदी में अनूदित करने की प्रक्रिया को गति दी है। आज डिजिटल युग ने हिंदी कंटेंट क्रिएटर्स, पत्रकारों, ब्लॉगर्स और पॉडकास्टर्स के लिए संभावनाओं के असीम द्वार खोल दिए हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स और मीडिया हाउसों में हिंदी की बढ़ती माँग ने युवाओं के लिए रोजगार के नए और आकर्षक अवसर पैदा किए हैं। तथापि, इस उजले पक्ष के साथ एक सावधान करने वाला पहलू भी है। एआई और मशीन जनित सामग्री के अति–प्रयोग से भाषा की शुद्धता, उसकी मौलिक आत्मा और व्याकरणिक सौंदर्य के क्षरण की संभावना बनी रहती है। शहिंग्लिशश का बढ़ता प्रभाव और मशीनी अनुवाद का अंधाधुंध उपयोग भाषा के लालित्य को चोट पहुँचा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी के विद्वान, भाषाविद और तकनीकी विशेषज्ञ मिलकर काम करें। हमें एआई मॉडलों को समृद्ध, प्रामाणिक और उच्च स्तरीय हिंदी डेटासेट से प्रशिक्षित करना होगा। एआई और डिजिटल क्रांति हिंदी के लिए कोई खतरा नहीं, बल्कि एक स्वर्णिम अवसर है। तकनीक ने हिंदी को महज साहित्यिक गोष्ठियों और आधिकारिक औपचारिकताओं से निकालकर वैश्विक डिजिटल पटल पर स्थापित कर दिया है। यदि हम भाषा की मौलिकता की रक्षा करते हुए इस तकनीक को पूरी क्षमता से अपनाएँ, तो आने वाले समय में हिंदी विश्व की सबसे सशक्त और ज्ञान–समृद्ध डिजिटल भाषाओं में अग्रगण्य होगी ।

भारत ने बदल लिया अपना रुख, ईरान के लिए नेतन्याहू को छोड़ा

अभिनय

क्या ब्रिक्स डिक्लेरेशन भारत की विदेश नीति में किसी बड़े बदलाव की तरफ इशारा है? ब्रिक्स ब्रिक समिट का संयुक्त बयान जारी हो चुका है और इस बयान में पूरे फोरम ने कई मुद्दों पर काफी सख्त रुख अपनाया है। मसलन लेबनन के मुद्दे पर इजराइल का सीधा नाम लेते हुए आलोचना की गई है और लेबनान में सीजफायर का पालन करने पर जोर दिया गया है। लेकिन अमेरिका की एकतरफा पाबंदियों की आलोचना करते समय ट्रंप या अमेरिका का कोई भी नाम का जिक्र नहीं किया गया है। इस संयुक्त बयान पर सभी देशों की सहमति बनवाना भारत के लिए एक बड़ी कूटनीतिक चुनौती थी क्योंकि इस साल ब्रिक्स की अध्यक्षता और सम्मेलन की मेजबानी दोनों भारत ही कर रहा है। अब देखना यह होगा कि इस बयान में इस्तेमाल किए गए शब्दों को बाकी देश किस तरह समझते हैं और भारत की तरफ से दिए गए संकेतों को किस तरह से लिया जाता है। पूरे बयान में बहुत सावधानी से शब्दों का चुनाव किया गया है। मिसाल के तौर पर देखें तो इसमें यूएन के दायरे से बाहर जाकर लगाए जाने वाले प्रतिबंधों की आलोचना की गई है। लेकिन अमेरिका का नाम नहीं लिया गया है। इसी तरह परमाणु ठिकानों पर हमले की निंदा की गई है। लेकिन ईरान का जिक्र नहीं है। इजराइल यहां जरूर एक अपवाद के तौर पर सामने आया है। गाजा और लेबनान से जुड़े कई हिस्से इजराइल का नाम सीधे तौर पर साझा बयान में शामिल करते हैं। इस संयुक्त बयान को तैयार करना इसलिए भी मुश्किल था क्योंकि ईरान, यूएई और सऊदी अरब मिडिल ईस्ट में चल रही जंग को लेकर अलग–अलग तरह की भाषा चाहते थे। ऐसे में सभी की सहमति से बयान जारी हो जाना भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत मानी जा रही है। खासकर इसलिए क्योंकि पहले ऐसी अटकलें थी कि रूस और ईरान अमेरिका के खिलाफ काफी कड़ी भाषा इस्तेमाल करवाना चाहेंगे जिसका भारत और ब्रिक्स के दूसरे देश विरोध कर सकते हैं। लेकिन आखिर में सभी देशों में कंसेंसस बन गया और साझा बयान जारी हो गया। इजराइल को लेकर ब्रिक्स के बयान में गजा में मानवीय मदद पहुंचाने पर जोर दिया गया है। साथ ही फिलिस्तीनियों को जबरन उनके घरों और जमीन से हटाने का विरोध किया गया है। घोषणापत्र की सबसे अहम बातों में से एक है एकतरफा आर्थिक प्रतिबंधों का मुद्दा। घोषणापत्र में कहा गया हम अंतरराष्ट्रीय कानून के खिलाफ एकतरफा दबाव वाले कदमों को लागू करने की निंदा करते हैं। हम फिर से कहते हैं कि ऐसे कदमों खासकर एकतरफा आर्थिक प्रतिबंधों और सेकेंडरी प्रतिबंधों के दूरगामी नकारात्मक असर होते हैं। इसमें यह भी कहा गया कि ऐसे कदमों का गरीबों पर बहुत बुरा असर पड़ता है। इसमें अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के खिलाफ एकतरफा दबाव वाले कदमों जिनमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से मंजूरी न लेने वाले प्रतिबंध भी शामिल हैं। दोनों ही बयानों में अमेरिका का नाम नहीं लिया गया है। लेकिन यह भाषा रूस और ईरान के लिए अहम है, जो ब्रिक्स के सदस्य हैं और जिन पर अमेरिका ने कई तरह की पाबंदियां लगा रखी हैं। ये दोनों देश लंबे समय से वॉशिंगटन की पाबंदी वाली नीतियों की आलोचना करते रहे हैं। इसलिए, इस भाषा में मॉस्को और तेहरान की एक अहम चिंता का ध्यान रखा गया है, लेकिन साथ ही घोषणापत्र को वॉशिंगटन पर सीधे हमले जैसा भी नहीं बनाया गया है। ब्रिक्स ने विश्व व्यापार संगठन के नियमों के खिलाफ एकतरफा टैरिफ और नॉन–टैरिफ उपायों को लेकर भी गहरी चिंता जताई है, और इसमें भी किसी देश का नाम नहीं लिया गया है। डोनाल्ड ट्रंप के व्हाइट हाउस में लौटने के बाद से यह मुद्दा और भी अहम हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने बार–बार ब्रिक्स को अमेरिका–विरोधी कहा है। उन्होंने इस समूह के साथ जुड़ने वाले देशों पर अतिरिक्त 10 प्रतिशत टैरिफ लगाने की धमकी दी है और डॉलर को कमजोर करने की कोशिशों पर 100 प्रतिशत ड्यूटी लगाने की चेतावनी भी दी है। ये तनाव सिर्फ ब्रिक्स समूह तक ही सीमित नहीं हैं। भारत को भी रूस से तेल खरीदने के कारण अमेरिकी टैरिफ का सामना करना पड़ा है। नई दिल्ली ने इस कदम को अनुचित, गैर–वाजिब और तर्कहीन बताया है और साथ ही अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए जरूरी कदम उठाने का संकल्प लिया है। पश्चिम एशिया के मुद्दे पर आम सहमति बनाना खास तौर पर मुश्किल था, क्योंकि ईरान और न्।म् इस टकराव को लेकर अलग–अलग राय रख रहे थे। ईरान ने इस बात के लिए भी ठत्प्ै की आलोचना की थी कि उसने अमेरिका और इजराइल के हवाई हमलों के खिलाफ कोई बयान जारी नहीं किया, और वह इस समूह से समर्थन की उम्मीद कर रहा था। आखिरी घोषणापत्र में तेहरान के लिए ऐसी बातें कही गई हैं जिनका वह हवाला दे सकता है, लेकिन इसमें उसका नाम नहीं लिया गया है। ठत्प्ै ने नागरिक बुनियादी ढांचे और अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की पूरी सुरक्षा–निगरानी वाली शांतिपूर्ण परमाणु सुविधाओं पर जानबूझकर किए गए हमलों पर गहरी चिंता जताई। इस हिस्से में ईरान, अमेरिका या इजराइल का नाम नहीं लिया गया है। हालांकि, टकराव के संदर्भ में, यह तेहरान के उस तर्क का समर्थन करता हुआ दिखता है कि उसकी सुरक्षित परमाणु सुविधाओं पर हमले अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन थे। ब्रिक्स ने देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने का भी आह्वान किया और पश्चिम एशिया में अधिकतम संयमष बरतने की अपील की। सबसे अहम बात यह है कि यह हिस्सा सदस्यों के अपने–अपने राष्ट्रीय रुख को याद दिलाता है, जिससे युद्ध के बारे में अलग–अलग राय रखने वाले देश अपनी व्यक्तिगत स्थिति छोड़े बिना एक ही टेक्स्ट पर सहमत हो पाते हैं। घोषणापत्र में इजरायल को लेकर स्पष्ट और सख्त रुख अपनाया गया है। गाजा में जारी हिंसा पर

चिंता जताते हुए ठत्प्ै ने फिलिस्तीनियों के जबरन विस्थापन का विरोध किया है। साथ ही 1967 की सीमाओं के आधार पर पूर्वी यरुशलम को राजधानी बनाकर संप्रभु फिलिस्तीनी राष्ट्र के गठन के समर्थन को दोहराया गया है। घोषणापत्र में दक्षिण अफ्रीका की ओर से इजरायल के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में चल रही कार्यवाही का भी उल्लेख किया गया।

डॉलर की नींव को बिना हिलाए उसे ब्रिक्स की चुनौती

के रवींद्रन

चीन एक व्यापक उद्देश्य पर काम कर रहा है। बीजिंग चाहता है कि युआन की अंतरराष्ट्रीय भूमिका काफी बड़ी हो और उसने अपनी मुद्रा में व्यापार के निपटान के लिए तंत्र का लगातार विस्तार किया है। चीन के व्यापारिक साझेदारों की

युआनक्लियरिंग व्यवस्थाओं तक पहुंच बढ़ रही है, जबकि चीन के क्रॉस–बॉर्डर इंटरबैंक भुगतान प्रणाली के विकास ने ऐसा बुनियादी ढांचा तैयार किया है जो स्थापित पश्चिमी वित्तीय नेटवर्क के साथ–साथ काम कर सकता है। डॉलर पर बहस में सबसे बड़ा बदलाव यह है कि ब्रिक्स अब एक साझा मुद्रा बनाने के राजनीतिक रूप से आकर्षक लेकिन आर्थिक रूप से मुश्किल विचार पर ध्यान नहीं दे रहा है। नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में जोर ज्यादा व्यावहारिक चीजों पर रहा हैरू सीमा–पार भुगतान को तेज और सस्ता बनाना, राष्ट्रीय भुगतान प्रणालियों को जोड़ना और व्यापार और निवेश के एक बड़े हिस्से का निपटान स्थानीय मुद्राओं में करने की अनुमति देना ।यह अंतर मायने रखता है। डॉलर को दरकिनार करने में सक्षम भुगतान प्रणाली और डॉलर की जगह लेने में सक्षम मुद्रा एक ही चीज नहीं हैं। ब्रिक्स पहली चीज बनाने के करीब पहुंच सकता है, जबकि दूसरी चीज हासिल करने से अभी भी काफी दूर है ।वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों ने इंटरऑपरेबिलिटी, स्थानीय–मुद्रा निपटान और तेज–भुगतान प्लेटफॉर्म और संभावित रूप से केंद्रीय बैंक की डिजिटल मुद्राओं के बीच संबंधों को चर्चा के केंद्र में रखा है। भारत का यूपीआई और ब्राजील कापिक्स दिखाते हैं कि उभरती अर्थव्यवस्थाएं ऐसी भुगतान प्रणालियां बना सकती हैं जो विकसित अर्थव्यवस्थाओं की प्रणालियों के बराबर या उनसे बेहतर हों। ऐसे नेटवर्क को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जोड़ने से ब्रिक्स मुद्रा की आवश्यकता के बिना लेनदेन की लागत और कॉरेस्पोंडेंट बैंकों पर निर्भरता कम हो सकती है ।यह डी–डॉलरलाइजेशन का अधिक हासिल करने योग्य रूप है क्योंकि यह दुनिया की मुख्य आरक्षित संपत्ति के रूप में डॉलर की भूमिका को तुरंत बदलने की कोशिश करने के बजाय लेनदेन मध्यस्थ के रूप में डॉलर के उपयोग पर प्रहार करता है। चीन एक व्यापक उद्देश्य पर काम कर रहा है। बीजिंग चाहता है कि युआन की अंतरराष्ट्रीय भूमिका काफी बड़ी हो और उसने अपनी मुद्रा में व्यापार के निपटान के लिए तंत्र का लगातार विस्तार किया है। चीन के व्यापारिक साझेदारों की युआनक्लियरिंग व्यवस्थाओं तक पहुंच बढ़ रही है, जबकि चीन के क्रॉस–बॉर्डर इंटरबैंक भुगतान प्रणाली के विकास ने ऐसा बुनियादी ढांचा तैयार किया है जो स्थापित पश्चिमी वित्तीय नेटवर्क के साथ–साथ काम कर सकता है ।फिर भी, युआन को ऐसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है जिन्हें भुगतान तकनीक दूर नहीं कर सकती। चीन पूंजी नियंत्रण बनाए रखता है, मुद्रा डॉलर की तरह स्वतंत्र रूप से परिवर्तनीय नहीं है, और वैश्विक निवेशकों को चीनी वित्तीय बाजारों तक वैसी ही अप्रतिबंधित पहुंच नहीं मिलती है। आरक्षित मुद्रा का दर्जा अंततरू सरकारों और निवेशकों की उस मुद्रा में बड़ी मात्रा में संपत्ति रखने की इच्छा पर निर्भर करता है, जिसमें राजनीतिक या वित्तीय तनाव के समय भी शामिल हैं। यहीं पर डॉलर को अपनी जबरदस्त ढांचागत बढ़त हासिल है। अमेरिका दुनिया को बड़ी मात्रा में आसानी से बिकने वाली सरकारी सिक्योरिटीज, गहरे कैपिटल मार्केट और एक ऐसी करेंसी देता है जिसे बिना ज्यादा रोक–टोक के सीमाओं के पार ले जाया जा सकता है। यहां तक कि जो देश अमेरिकी प्रभाव को कम करना चाहते हैं, वे भी इस प्रणाली पर बहुत ज्यादा निर्भर हैं ।चीन खुद इस विरोधाभास को दिखाता है, हालांकि स्थिति उतनी तेजी से नहीं बदल रही है जितना कभी–कभी माना जाता है। बीजिंग कई सालों से अमेरिकी ट्रेजरीसिक्योरिटीज में अपनी हिस्सेदारी कम कर रहा है। जून 2026 तक, मुख्य भूमि चीन की हिस्सेदारी गिरकर लगभग 633 अरब डॉलर हो गई थी, जो 2008 के बाद का सबसे निचला स्तर है और अपने उच्चतम स्तर से काफी कम है। यह गिरावट दिखाती है कि चीन सक्रिय रूप से अपने रिजर्व में विविधता ला रहा है, इसलिए ट्रेजरी में उसके निवेश को अब सिफ इस बात के सुबूत के तौर पर पेश नहीं किया जा सकता कि बीजिंग हमेशा के लिए डॉलर प्रणाली से बंधा हुआ है। लेकिन अरबों डॉलर की बची हुई हिस्सेदारी भी मूल समस्या को दिखाती है। अभी भी ऐसा कोई बाजार नहीं है जहां चीन कीमतों, मुद्रा या अपने वित्तीय हितों पर असर डाले बिना आसानी से उन रिजर्व को ले जा सके। खाड़ी देश एक और महत्वपूर्ण परीक्षा पेश करते हैं। तेल उत्पादक देश डॉलर के बाहर सेटलमेंट व्यवस्थाओं के साथ ज्यादा सहज हो गए हैं, खासकर इसलिए क्योंकि चीन और भारत के साथ उनके आर्थिक संबंध बढ़ रहे हैं। ब्रिक्स में यूएई की मौजूदगी ऐसी चर्चाओं को और महत्व देती है, जबकि क्षेत्रीय देश एशियाई भागीदारों के साथ पेमेंट लिंक और स्थानीय–मुद्रा व्यवस्थाओं की संभावना तलाश रहे हैं। लेकिन चुनिंदा लेन–देन के लिए युआन, रुपये या अन्य करेंसी स्वीकार करने की इच्छा का मतलब पेट्रोडॉलर ढांचे को छोड़ना नहीं है। खाड़ी देशों की करेंसी डॉलर से मजबूती से जुड़ी हुई हैं, उनके सॉवरेनवेल्थफंड में बड़ी मात्रा में डॉलर सम्पदा हैं, और अमेरिका उनकी सुरक्षा और निवेश संबंधों के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है। इसलिए, पूरी तरह हटाने के बजाय विविधता लाना ज्यादा संभव है। वाशिंगटन करेंसी के मुद्दे को भू–राजनीति से अलग करना भी मुश्किल बना रहा है। डोनाल्ड ट्रंप ने बार–बार ब्रिक्स देशों को कड़ी व्यापारिक आर्थिक दंड की धमकी दी है, अगर वे डॉलर की जगह लेने के लिए बनाई गई किसी मुद्रा का समर्थन करते हैं। उनके प्रशासन ने साथ ही टैरिफ, व्यापार वार्ता और एक्सचेंज–रेट के सवालों का इस्तेमाल आर्थिक नीति के साधनों के तौर पर किया है। अमेरिकी दृष्टिकोण में एक अंतर्निहित तनाव है। वाशिंगटन रिजर्व–मुद्रा से मिलने वाले असाधारण लाभों को बनाए रखना चाहता है। हालांकि, ट्रंप प्रशासन ने डॉलर को ज्यादा प्रतिस्पर्धी बनाने और अमेरिका के बाहरी असंतुलन को कम करने की कोशिश भी की है। रिजर्व मुद्रा की वजह से दुनिया भर में उसकी लगातार मांग बनी रहती है, जिससे वह घरेलू मैन्युफैक्चरर्स की पसंद से ज्यादा मजबूत बनी रह सकती है। आर्थिक ताकत का आक्रामक इस्तेमाल एक और विरोधाभास पैदा करता है। प्रतिबंध, टैरिफ और धमकियां थोड़े समय के लिए अमेरिकी दबदबे को बढ़ा सकती हैं, लेकिन इनसे दूसरे देशों को ऐसी प्रणाली विकसित करने की प्रेरणा भी मिलती है जिनसे वाशिंगटन पर उनकी निर्भरता कम हो सके। इसीलिए ब्रिक्स भुगतान परियोजना को सिर्फ इसलिए खारिज नहीं किया जाना चाहिए कि कोई दूसरी रिजर्वमुद्रा अभी दूर की कौड़ी है। इसकी अहमियत धीरे–धीरे होने वाले बदलाव में है। अगर कोई ब्राजीलियाई कंपनी किसी भारतीय आपूर्तिकर्ता को सीधे रियाल और रुपये में भुगतान कर सकती है।

मध्यप्रदेश हिन्दी में एमबीबीएस की पढ़ाई प्रारंभ करने वाला देश का पहला राज्य

विश्वास

स्टीफन स्पेंडर की तरह कहें तो सर्जना के स्तर पर भाषा, अपनी भाषा एक आध्यात्मिक गतिविधि है या टाल्सटाय के शब्दों में यहाँ आध्यात्मिक सक्रियता के स्त्रोत प्रवाहित होते हैं या मुक्तिबोध के शब्दों में श्स्वय से ऊपर उठना, अन्य के मर्म में प्रवेश करना मनुष्यता का सबसे बड़ा लक्षण है। और यह लक्षण हिन्दी में शब्द बनते ही दिखाई देने लगता है। आकार, अक्षर और ध्वनि का एकाकार जिस भाषा में हुआ वह सिर्फ हिन्दी है। इसलिए मैं गिलक्राइस्ट जैसे लोगों का सख्त विरोधी हूं जो हिन्दी को गंवारू और हिन्दुओं की भाषा कहता था। शगार्सा–द–तासीय ने लिखा था हिन्दी में हिन्दू धर्म का आभास है। इसलिए यदि हिन्दी के लोकवृत्त को समझना हो तो भक्ति आंदोलन को समझना जरुरी है। जब कबीर कहते हैं शकबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ्य तो वो बाजार का नहीं उसकी माया का विरोध कर रहे हैं या विद्यापति की उम्मीद शबिपत अपत तरु पाओल रे पुन नव नव पात्य। यह हिन्दी का संदेश है कि जो पत्ते सूख गए हैं तो उनमें फिर नए पत्ते आएंगे। हमारे देश में उदारवाद के पगचिन्ह भक्तिकाल में साफ–साफ दिखाई देते हैं। आखिर मथुरा में आचार्य वल्लभ पहुंचे, चौतन्य पहुंचे और इन सभी ने सामुदायिक खाइयों को पाटने का काम किया। हिन्दी की पाचनशक्ति अद्भुत है। इसमें दुनियाभर की भाषाओं के शब्द हैं और वे अतिथि शब्द नहीं है बल्कि आत्मसात कर लिए गए शब्द हैं। ऐसा दुनिया की कोई भाषा नहीं कर सकी। अंग्रेजी भी नहीं जिसकी सर्वाधिक डुग्गी हमारे देश में पीटी जाती है। अंग्रेजी से पहले वहाँ लैटिन और ग्रीक बोली जाती थी यही अभिजात्य वर्ग की भाषा थी। अंग्रेजी उस समय अभिजात्यों की नहीं हाशिए पर जी रहे गरीबों और मजदूरों की भाषा थी। उनके शब्द लिए गए मगर अंग्रेजी उन्हें आत्मसात नहीं कर पायी। जैसे जॉन कीट्स की एक कविता का शीर्षक है ष्ला बेले डेम सैंस मर्सीष यानि एक दयाहीन सुंदर महिला यह शीर्षक 15वीं शताब्दी का है। अंग्रेजी में यह कविता बेहद चर्चित है, जिसमें एक परी शूरवीर को सम्मोहित करके अप्रिय भाग्य का श्राप देती है। हिंदी सिर्फ एक भाषा ही नहीं भारत की संस्कृति है। यह उदार और निर्माणात्मक में सुन भर लीजिए तो हिन्दी स्मृति में बसने लगती है। हमारे यशस्वी और श्रद्धेय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की पंक्तियां है– ष्आसमान में सिर उठाकर, घने बादलों को चीरकर, रोशनी का संकल्प लें, अभी तो सूरज उगा है। दृढ़ निश्चय के साथ चलकर, हर मुश्किल को पार कर,घोर अंधेरे को मिटाने, अभी तो सूरज उगा है।ष

आज सूरदास कोलंबिया में, मीरा अमेरिका के कई बड़े विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही हैं। जायसी पढ़ाए जा रहे हैं। हिन्दी का अर्थ ही नहीं शब्द–शब्द श्लोक है। जो बोलते ही सूखे गेहूँ के दाने सा खनकता है। हिन्दी के निकट बैठकर महात्मा गांधी दिखाई देने लगते हैं अर्थात हर गरीब मन का दर्द जहां नव गीत में ढ़लने लगे वह हमारी भाषा है हिंदी।

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का निरंतर प्रयास रहा है कि भारत की शिक्षा व्यवस्था भारतीय भाषाओं, भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय प्रतिभा की शक्ति के अनुरूप आगे बढ़े। लंबे समय तक अंग्रेजी को उच्च शिक्षा और विशेषकर चिकित्सा एवं तकनीकी शिक्षा का प्रमुख माध्यम माना जाता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामीण, गरीब, किसान और सामान्य परिवारों से आने वाले अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए उच्च स्तरीय शिक्षा तक पहुंच का मार्ग अपेक्षाकृत कठिन बना रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने शिक्षा में भारतीय भाषाओं के महत्व को नई दिशा दी। यह केवल भाषा परिवर्तन का विषय नहीं है बल्कि यह शिक्षा को अधिक समावेशी, सहज और विद्यार्थी–केंद्रित बनाने की व्यापक सोच का हिस्सा बना। प्रधानमंत्री जी के इसी संकल्प को धरातल पर उतारते हुए मध्यप्रदेश ने चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल की। मुझे इस बात का गर्व है कि चिकित्सा शिक्षा मंत्री के रूप में कार्य करते हुए हम मध्यप्रदेश का नाम उस ऐतिहासिक उपलब्धि से जोड़ने में सफल रहे, जब मध्यप्रदेश ने हिन्दी माध्यम में एमबीबीएस की पढ़ाई प्रारंभ करने वाला देश का पहला राज्य होने का गौरव हासिल किया। यह केवल मध्यप्रदेश के लिए उपलब्धि नहीं थी बल्कि भारतीय भाषाओं के प्रति विश्वास को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण कदम था। 16 अक्टूबर 2022 वो ऐतिहासिक दिन जब भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के करकमलों द्वारा एमबीबीएस प्रथम वर्ष की हिन्दी पुस्तकों का विमोचन किया गया और हिंदी में मेडिकल शिक्षा के नए अध्याय का शुभारंभ हुआ। यह क्षण इसलिए भी ऐतिहासिक था क्योंकि पहली बार चिकित्सा जैसे अत्यंत तकनीकी और विशेषज्ञता वाले विषय में भारतीय भाषा को शिक्षा के प्रभावी माध्यम के रूप में बड़े स्तर पर स्थापित करने का प्रयास किया गया। हमारा उद्देश्य कभी यह नहीं रहा कि हिन्दी को अंग्रेजी के विरोध में खड़ा किया जाए। उद्देश्य यह है कि भाषा किसी विद्यार्थी की प्रतिभा के मार्ग में बाधा न बने। रोजमर्रा की जिंदगी में जिस भाषा में विद्यार्थी सोचता है, परिवार से संवाद करता है और अपने अनुभवों को समझता है, उसी भाषा में कठिन अवधारणाओं को समझना उसके लिए स्वाभाविक रूप से अधिक सहज हो सकता है। हिन्दी में एमबीबीएस का पाठ्यक्रम तैयार करना सामान्य अनुवाद का कार्य नहीं था। चिकित्सा विज्ञान की शब्दावली, अवधारणाओं और तकनीकी विषयों को विद्यार्थियों के लिए वैज्ञानिक रूप से सही, सहज और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत करना एक बड़ी चुनौती थी। इसी उद्देश्य से चिकित्सा शिक्षा विभाग के अंतर्गत हिन्दी में एमबीबीएस पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए पृथक हिन्दी पाठ्यक्रम प्रकोष्ठ का गठन किया गया तथा विशेषज्ञों की उच्च स्तरीय टास्क फोर्स के माध्यम से कार्ययोजना तैयार की गई। चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञों की सहभागिता से पाठ्यक्रम और पुस्तकों को चरणबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से तैयार करने का कार्य किया गया। हिन्दी पुस्तकों के रूपांतरण और चिकित्सा शिक्षा की इस पूरी प्रक्रिया को संस्थागत स्वरूप देने के लिए हिन्दी चिकित्सा प्रकोष्ठ श्मंदास्य का विधिवत गठन किया गया। जिस प्रकार समुद्र मंथन से अमृत प्राप्त हुआ था, उसी प्रकार ज्ञान के मंथन, विशेषज्ञों के परिश्रम और संकल्प की साधना से श्मंदास्य के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अमृत निकला। महीनों के अथक परिश्रम, विशेषज्ञों के ज्ञान और मिशन मोड में किए गए कार्य के परिणामस्वरूप एमबीबीएस की पुस्तकों और पाठ्यक्रम को हिन्दी में उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई। हिन्दी में चिकित्सा शिक्षा की शुरुआत केवल प्रथम वर्ष तक सीमित नहीं रही। प्रथम वर्ष की पुस्तकों के विमोचन के बाद हिन्दी चिकित्सा प्रकोष्ठ श्मंदास्य में एमबीबीएस द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ष की पुस्तकों के लिप्यंतरण एवं पाठ्यक्रम संबंधी कार्य को भी आगे बढ़ाया गया। यह क्रम बताता है कि मध्यप्रदेश की पहल किसी प्रतीकात्मक कार्यक्रम तक सीमित नहीं थी। इसके पीछे एक व्यापक और दीर्घकालिक दृष्टि थी चिकित्सा शिक्षा को भारतीय भाषाओं में अधिक सुलभ बनाना। मध्यप्रदेश की इस पहल के बाद छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों ने भी हिन्दी में एमबीबीएस शिक्षा की दिशा में पहल की। हिन्दी में एमबीबीएस भारतीय भाषाओं के लिए एक सकारात्मक राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत साबित हुई।

जौनपुर पहुंची जेन जी कनेक्ट यात्रा, युवाओं ने उठाए रोजगार और शिक्षा के मुद्दे

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर में जस्टिस मोर्चा की जेन जी कनेक्ट यात्रा मंगलवार को अपने 27वें दिन जौनपुर पहुंची। त्रिलोचन से सिरकोनी होते हुए यात्रा शहर में प्रवेश किया। इस दौरान यात्रियों ने छात्रों, युवाओं और स्थानीय लोगों से संवाद कर शिक्षा, रोजगार, पेपर लीक, निष्पक्ष परीक्षा व्यवस्था और सरकारी स्कूलों की स्थिति जैसे मुद्दों पर चर्चा की। यात्रा के दौरान विभिन्न सरकारी स्कूलों की स्थिति का भी जायजा लिया गया।

जौनपुर शहर पहुंचने पर गांधी पार्क में सैकड़ों लोगों ने यात्रा का स्वागत किया। विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नागरिकों ने युवाओं के मुद्दों को समर्थन दिया। गांधी पार्क से यात्रा अंबेडकर पार्क पहुंची। यहां युवाओं ने पेपर लीक, चंदा चोरी और सरकारी स्कूलों की बदहाल स्थिति को लेकर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि परीक्षा व्यवस्था में अनियमितताओं का खामियाजा मेहनत करने वाले विद्यार्थियों को भुगतना पड़ता है। इसके बाद यात्रा कचहरी, सद्भावना पुल, छरछू चौराहा, शाही पुल और तिलकधारी सिंह कॉलेज होते हुए आगे बढ़ी। मार्ग में पर्चे वितरित कर जनसंवाद किया गया। जस्टिस मोर्चा के प्रतिनिधियों ने कहा कि यात्रा का उद्देश्य युवाओं की समस्याओं और आकांक्षाओं को सुनकर उन्हें साझा मंच देना है। उन्होंने कहा कि युवा रोजगार, बेहतर शिक्षा और पारदर्शी परीक्षा व्यवस्था चाहते हैं। यात्रा प्रयागराज, प्रतापगढ़ और रायबरेली होते हुए दो अक्टूबर को लखनऊ पहुंचेगी, जहां इसका समापन होगा। यात्रा में प्रियेश, रजत, शान्तनु, अवनीश, नीरज, राजू, विवेक, सूफी, सुमन, जय सहित बड़ी संख्या में युवा शामिल रहे।

किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए मेडिकल कॉलेज जौनपुर में एचपीवी टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। महिलाओं में होने वाले सर्वाइकल कैंसर (गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर) से बचाव के उद्देश्य से उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, जौनपुर में किशोरियों के लिए एचपीवी टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। 'यह टीकाकरण 14द्द15 वर्ष आयु वर्ग की किशोरियों' के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। स्त्री एवं प्रसूति रोग की

विभागाध्यक्ष डॉ0 सरिता पांडेय एवं बाल रोग की विभागाध्यक्ष डॉ0 ममता ने बताया कि प्रत्येक सप्ताह बुधवार एवं शनिवार, सप्ताह में दो दिन एचपीवी टीकाकरण की सुविधा' 'मेडिकल कॉलेज में प्रदान की जा रही है।' पात्र किशोरियों के अभिभावक निर्धारित दिवसों पर अपनी पुत्रियों को मेडिकल कॉलेज लाकर चिकित्सकीय परामर्श एवं आवश्यक प्रक्रिया के उपरांत टीका लगवा सकते हैं। चिकित्सकों के अनुसार, ह्यूमन पैपिलोमावायरस संक्रमण सर्वाइकल कैंसर के प्रमुख कारणों में से एक है। एचपीवी वैक्सीन इस संक्रमण से बचाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किशोरावस्था में टीकाकरण कराने से भविष्य में एचपीवी संक्रमण तथा उससे संबंधित गंभीर बीमारियों के जोखिम को कम करने में सहायता मिलती है। इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे अपनी पात्र आयु की बेटियों के एचपीवी टीकाकरण के संबंध में चिकित्सकीय सलाह प्राप्त करें। प्रधानाचार्य प्रो0 (डॉ0) आर0बी0 कमल ने कहा कि महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम के लिए जागरूकता एवं समय पर टीकाकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है। मेडिकल कॉलेज का उद्देश्य केवल रोगों का उपचार करना ही नहीं, बल्कि रोगों की रोकथाम एवं जन–जागरूकता के माध्यम से स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान देना भी है। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे एचपीवी टीकाकरण के संबंध में जानकारी प्राप्त करें और अपनी पात्र बेटियों को निर्धारित दिवस पर मेडिकल कॉलेज लाकर टीकाकरण का लाभ दिलाएं। मुख्य चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर (डॉ) ए. ए. जाफरी ने बताया कि एचपीवी टीकाकरण के संबंध में किसी भी प्रकार की जानकारी अथवा चिकित्सकीय परामर्श के लिए अभिभावक बाल रोग विभाग, उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, जौनपुर से संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि अभिभावकों में जागरूकता बढ़ाकर ही एचपीवी संक्रमण एवं सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम की दिशा में प्रभावी कदम उठाया जा सकता है। मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने जनपदवासियों से अपील की है कि 14द्द15 वर्ष आयु वर्ग की पात्र किशोरियों के एचपीवी टीकाकरण के प्रति जागरूक रहें तथा निर्धारित बुधवार एवं शनिवार को बाल रोग विभाग में चिकित्सकीय परामर्श प्राप्त कर टीकाकरण की सुविधा का लाभ मिलेगा।

अलीगंज में बनेगा शहर का सबसे बड़ा हेल्थ और स्पोर्ट कॉरिडोर

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ के अलीगंज में एलडीए शहर का सबसे बड़ा हेल्थ और स्पोर्ट कॉरिडोर बनाएगा। इसके लिए अलीगंज के सेक्टर–ओ में 14.71 एकड़ जगह चिह्नित की गई है। इस परियोजना पर करीब 6.50 करोड़ रुपये खर्च होंगे। एलडीए वीसी प्रथमेश कुमार ने बताया कि यह कॉरिडोर पीपीपी मॉडल पर विकसित होगा। कुछ काम एलडीए खुद भी कराएगा। योजना की 6.31 एकड़ जमीन पर एलडीए करीब छह करोड़ रुपये की लागत से तीन पार्क बनाएगा। ये पार्क तीन अलग–अलग थीम में होंगे। अलीगंज स्टेडियम के पास 2.55 एकड़ में बच्चों का पार्क बनेगा। इसमें खेलने, मनोरंजन और साइकिल ट्रैक की सुविधा होगी। कॉरिडोर से गुजरने वाले नाले को भी नया स्वरूप दिया जाएगा। इसे दक्षिण कोरिया के सियोल स्थित चेओंगग्येचियोन स्ट्रीम की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। नाले के दोनों किनारों पर पैदल पथ, हरियाली और बैठने की जगह बनेगी। यह परियोजना घनी आबादी वाले अलीगंज, पुरनिया, कपूरथला और जानकीपुरम में खुले पार्कों की कमी पूरी करेगी। कॉरिडोर को चार हिस्सों में बांटा गया है।

विशाल यादव हत्याकांडः परिजनों से मिले सपा विधायक लकी यादव, एक लाख रुपये की सहायता दी

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। उत्तर प्रदेश के जौनपुर में लाइन बाजार थाना क्षेत्र के रामदयालगंज बाजार में 11 सितंबर को लोहे की सरिया से विशाल यादव की हत्या के बाद बुधवार को मल्हनी विधानसभा क्षेत्र के सपा विधायक लकी यादव मृतक के परिजनों से मिलने पहुंचे। उन्होंने परिवार को सांत्वना देते हुए हर संभव मदद और न्याय का भरोसा दिलाया। इस दौरान विधायक ने परिजनों को एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता का चेक भी सौंपा। लकी यादव ने कहा कि दुख की इस घड़ी में समाजवादी पार्टी और वह स्वयं पीड़ित परिवार के साथ खड़े हैं। उन्होंने कहा कि मामले की पुलिस जांच कर रही है और जो भी दोषी होगा, उसके खिलाफ कार्रवाई होनी चाहिए। विधायक ने बताया कि मामले में दो नामजद आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है, जबकि अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस कार्रवाई कर रही है। उन्होंने कहा कि वह पुलिस अधीक्षक से मुलाकात कर शेष आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग करेंगे, ताकि परिवार को न्याय मिल सके। विधायक ने कुछ राजनीतिक विरोधियों पर घटना को लेकर राजनीति करने और उन्हें बदनाम करने की कोशिश का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि मामले की जांच जारी है और जांच में जो तथ्य सामने आएंगे, उसी के आधार पर कार्रवाई होगी। उन्होंने बताया कि मृतक के परिवार के खिलाफ एनएचएआई की ओर से भी मुकदमा दर्ज कराया गया है। इस मामले को लेकर भी संबंधित अधिकारियों से बातचीत की जाएगी। उन्होंने कहा कि वह सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से भी इस संबंध में बात करेंगे और संभव हुआ तो परिजनों की उनसे मुलाकात कराई जाएगी।

कड़ी धूप में होमगार्ड भर्ती की दौड़, 15 अभ्यर्थियों की तबीयत बिगड़ी

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। उत्तर प्रदेश होमगार्ड भर्ती की शारीरिक दक्षता परीक्षा के दौरान मंगलवार को जौनपुर के सरायख्वाजा थाना क्षेत्र स्थित इंदिरा गांधी स्टेडियम, सिद्धिकपुर में कड़ी धूप के कारण 15 अभ्यर्थियों की तबीयत बिगड़ गई। इनमें कई अभ्यर्थी दौड़ के दौरान गिरकर घायल हो गए। सभी को उपचार के लिए उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय एवं संबद्ध अस्पताल, सिद्धिकपुर ले जाया गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मंगलवार को स्टेडियम में होमगार्ड भर्ती के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा चल रही थी। तेज धूप और गर्मी के बीच दौड़ में शामिल अभ्यर्थियों की अचानक तबीयत बिगड़ने लगी। नितेश निवासी जमुनिया, गाजीपुर, राजकुमार निवासी भट्ठी, गाजीपुर और सत्यम निवासी गाजीपुर समेत 15 अभ्यर्थी दौड़ के दौरान गिरकर घायल हो गए। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिसकर्मियों की मदद से अभ्यर्थियों को स्टेडियम से बाहर लाकर एंबुलेंस के माध्यम से मेडिकल कॉलेज पहुंचाया गया, जहां उनका उपचार शुरू किया गया। भर्ती परीक्षा में गाजीपुर और बलिया समेत आसपास के जिलों के अभ्यर्थी शामिल होने पहुंचे थे। सिद्धिकपुर बूथ चौकी प्रभारी जियाउद्दीन अहमद ने बताया कि 15 अभ्यर्थियों को उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया था। इनमें 12 को प्राथमिक उपचार के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया, जबकि तीन अभ्यर्थियों का इलाज चल रहा है।

विशाल यादव के परिजनों से मिले अजय राय, एक करोड़ मुआवजा और सरकारी नौकरी की मांग

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बुधवा र को रामदयालगंज बाजार में लोहे की सरिया से हत्या किए गए विशाल यादव के परिजनों से मुलाकात कर शोक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने परिजनों को भरोसा दिलाया कि कांग्रेस पार्टी इस दुख की घड़ी में उनके साथ खड़ी है और न्याय की लड़ाई में हरसंभव सहयोग करेगी। पत्रकारों से बातचीत में अजय राय ने कहा कि विशाल यादव की दिनदहाड़े हत्या कर दी गई, लेकिन आरोपित खुलेआम घूम रहे हैं। उन्होंने प्रदेश की कानून–व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में अत्याचार, अन्याय और गुंडाराज का माहौल है। उन्होंने गोंडा, देवरिया और बदायूं सहित अन्य स्थानों पर हुई घटनाओं का भी उल्लेख किया। अजय राय ने सरकार से विशाल यादव के परिवार को एक करोड़ रुपये मुआवजा और एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की मांग की। उन्होंने कहा कि अपराधियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई होनी चाहिए। उन्होंने सवाल किया कि जौनपुर में 'बुलडोजर एक्शन' कब होगा। परिजनों ने अजय राय को अपनी पीड़ा बताते हुए आरोप लगाया कि घटना के बाद धरने के दौरान पुलिस ने उनके साथ मारपीट की। उन्होंने दावा किया कि विशाल के कैंसर पीड़ित भाई के साथ भी पुलिस ने मारपीट की। परिवार ने पुलिस पर आरोपितों की मदद करने और मामले को दबाने का आरोप लगाया। अजय राय ने आरोप लगाया कि पुलिस ने 14 लोगों को जेल भेज दिया, जबकि वास्तविक अपराधी खुले घूम रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी इस मामले को दबने नहीं देगी और विशाल यादव को न्याय दिलाने के लिए सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करेगी। उन्होंने भाजपा पर भी गंभीर आरोप लगाए और कहा कि कई अपराधी भाजपा में शामिल होकर राजनीतिक संरक्षण प्राप्त कर रहे हैं। राय ने आरोप लगाया कि भाजपा में शामिल होने के बाद अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होती। उन्होंने सरकार पर भ्रष्टाचार के भी आरोप लगाए।

निष्ठा और समर्पण से पीयू बनेगा 'रोल मॉडल' – प्रो. राकेश सिंह

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर स्थित वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय (पीयू) के कुलपति प्रो. राकेश कुमार सिंह ने बुधवार को आर्यभट्ट सभागार में आयोजित संवाद कार्यक्रम में शिक्षकों और कर्मचारियों को संबोधित किया। नियुक्ति के बाद विश्वविद्यालय परिवार के साथ यह उनका पहला संवाद कार्यक्रम था। इस दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च ग्रेडिंग के साथ स्थापित करने का अपना विजन साझा किया। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय को आदर्श शिक्षण संस्थान और रोल मॉडल बनाने के लिए सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों का निष्ठापूर्ण सहयोग जरूरी है। उन्होंने कहा कि सभी को पूर्ण समर्पण के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करना होगा। आज किए गए उत्कृष्ट कार्यों का लाभ आने वाली पीढ़ियों को मिलेगा। प्रो. सिंह ने शिक्षकों से देश के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में हो रहे नवाचारों और अच्छी पहलों का अध्ययन कर उन पर चर्चा करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि उपयोगी नवाचारों को विश्वविद्यालय की कार्ययोजना में शामिल कर उन्हें धरातल पर उतारा जाए। कानपुर में आयोजित 'एआई मंथन' के महत्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों और कर्मचारियों में अपार ऊर्जा और क्षमता है। आवश्यकता इस बात की है कि इस ऊर्जा का सकारात्मक दिशा में उपयोग किया जाए, ताकि पीयू राष्ट्रीय मानकों पर खरा उतर सके। उन्होंने कहा कि जिस तरह वृक्ष अपने फल और छाया का स्वयं उपयोग नहीं करता, बल्कि दूसरों के काम आता है, उसी प्रकार विश्वविद्यालय परिवार को भी अपने कार्यों से समाज के हित में योगदान देना चाहिए। कार्यक्रम में डीएसडब्ल्यू प्रो. प्रमोद यादव ने विश्वविद्यालय में प्रस्तावित महत्वपूर्ण कार्यक्रमों और सेवा संकल्प अभियान की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह समेत बड़ी संख्या में शिक्षक और कर्मचारी मौजूद रहे।

'मैक्स हेल्थकेयर फाउंडेशन ने अपने चौथे वर्ष में मैक्स मेडिकल स्कॉलरशिप का किया विस्तार, अब 250 मेधावी डठठै छात्रों की शिक्षा को मिलेगा वित्तीय सहयोग'

'लखनऊ, सितंबर 16, 2026।' मैक्स हेल्थकेयर फाउंडेशन ने आज अपने प्रमुख कार्यक्रम मैक्स मेडिकल स्कॉलरशिप प्रोग्राम के चौथे संस्करण की शुरुआत की घोषणा की, जिसके तहत इस वर्ष वार्षिक इनटेक को बढ़ाकर 250 नए छात्रों तक किया जाएगा, जबकि पिछले वर्षों में यह संख्या 100 छात्र थी। इस विस्तार से कार्यक्रम की पहुंच में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होगी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के अधिक मेधावी छात्रों को मेडिकल शिक्षा हासिल करने का अवसर मिलेगा। इस स्कॉलरशिप के तहत इस वर्ष उन 250 नए छात्रों की मेडिकल शिक्षा का पूरा खर्च उठाया जाएगा, जिन्होंने नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट क्वालीफाई किया है और शैक्षणिक वर्ष 2026–27 के लिए दिल्ली–एनसीआर, मुंबई, नागपुर, लखनऊ, मोहाली, देहरादून, बठिंडा और भुवनेश्वर के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में बैचलर ऑफ मेडिसिन एंड बैचलर ऑफ सर्जरी में दाखिला लिया है। नए छात्रों के लिए अवसर प्रदान करने के साथ–साथ, मैक्स मेडिकल स्कॉलरशिप कार्यक्रम पिछले वर्षों में चुने गए छात्रों की पढ़ाई का खर्च भी जारी रखेगा। ये छात्र अब मेडिकल शिक्षा के दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ष में हैं, जिससे उनकी पूरी पढ़ाई के दौरान उन्हें लगातार आर्थिक सहायता मिलती रहेगी। मैक्स मेडिकल स्कॉलरशिप प्रोग्राम, मैक्स हेल्थकेयर फाउंडेशन के कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी प्रयासों का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य मेडिकल प्रोफेशनल्स की अगली पीढ़ी को सशक्त बनाना और आगे बढ़ाना है। इस घोषणा पर बात करते हुए, मैक्स हेल्थकेयर फाउंडेशन की चेयरपर्सन, श्रीमती तरुणा सोई ने कहा, "आर्थिक तंगी अक्सर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के प्रतिभाशाली छात्रों को डॉक्टर बनने के अपने सपने को पूरा करने से रोक देती है। पिछले तीन वर्षों में, मैक्स मेडिकल स्कॉलरशिप प्रोग्राम ने 245 छात्रों की मेडिकल शिक्षा में सहयोग किया है। इस वर्ष, हम इस कार्यक्रम का व्यापक विस्तार कर रहे हैं ताकि 250 नए छात्रों को सहयोग दिया जा सके, जिससे कई और योग्य छात्र बिना किसी आर्थिक बोझ के डॉक्टर बनने का अपना सपना पूरा कर सकें। इन भावी मेडिकल प्रोफेशनल्स को सहयोग देकर, हम न केवल व्यक्तिगत आकांक्षाओं को सशक्त बना रहे हैं, बल्कि प्रतिभा को निखार रहे हैं, शिक्षा की राह में आने वाली बाधाओं को दूर कर रहे हैं और एक बेहतर, समावेशी और स्वस्थ भविष्य का निर्माण कर रहे हैं।" इस स्कॉलरशिप के लिए पंजीकरण 16 सितंबर, 2026 से शुरू होगा मैक्स मेडिकल स्कॉलरशिप भारत में मेडिकल शिक्षा के लिए दी जाने वाली अब तक की सबसे बड़ी वार्षिक स्कॉलरशिप ग्रांट्स में से एक है। चयनित छात्रों को उनके 5 वर्षीय डठठै कोर्स की पूरी अवधि के दौरान व्यापक वित्तीय सहयोग प्रदान किया जाएगा। इस स्कॉलरशिप के तहत ट्यूशन फीस, एक लैपटॉप, पाठ्यपुस्तकें और बोन सेट, डिसेक्शन किट, स्टेथोस्कोप जैसे उपकरण, और इसके अलावा, छात्रों को हर महीने के खर्च के लिए आर्थिक मदद और पढ़ाई में मार्गदर्शन भी दिया जाएगा। आवेदन 4 अक्टूबर, 2026 तक स्वीकार किए जाएंगे। चयन की प्रक्रिया कई चरणों में होगी। इसमें आवेदन की जांच, छात्रों की शॉर्टलिस्टिंग, इंटरव्यू और जरूरी दस्तावेजों की जांच शामिल होगी। 250 तक छात्रों का चयन मैक्स हेल्थकेयर फाउंडेशन की जूरी द्वारा तय किए गए मानदंडों के आधार पर पूरी जांच के बाद किया जाएगा। स्कॉलरशिप फॉर्म दिल्ली–एनसीआर, मुंबई, नागपुर, लखनऊ, मोहाली, देहरादून, बठिंडा और भुवनेश्वर के प्रतिष्ठित सरकारी कॉलेजों में पढ़ने वाले आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के छात्रों के लिए www-maxhealthcarefoundation-org पर उपलब्ध हैं।

शोषितों, वंचितों और उपेक्षितों के महानायक थे डा. रत्नप्पा कुम्हार - राज्यमंत्री

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर में नगर के एक होटल में मंगलवार को प्रजापति समाज जौनपुर (रजि.) के तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी, पद्मश्री से सम्मानित एवं संविधान निर्माण में योगदान देने वाले डा. रत्नप्पा भरमप्पा कुम्हार की जयंती मनाई गई। समारोह में समाज के विभिन्न क्षेत्रों से आए बुद्धिजीवियों, जनप्रतिनिधियों और प्रबुद्ध नागरिकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि राज्यमंत्री गिरीश चंद्र यादव, भाजपा जिलाध्यक्ष अजीत प्रजापति, राज्य महिला आयोग की सदस्य अंजू प्रजापति, नेत्र सर्जन डा. आरके चक्रवर्ती और नगर पालिका अध्यक्ष मनोरमा मौर्या ने डा. रत्नप्पा कुम्हार के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलित कर किया। राज्यमंत्री ने कहा कि डा. रत्नप्पा कुम्हार शोषित, वंचित और उपेक्षित समाज के महानायक थे। उन्होंने डा. बीआर आंबेडकर के साथ संविधान के अंतिम मसौदे पर हस्ताक्षर किए थे, जो प्रजापति समाज के लिए गौरव की बात है। उन्होंने कहा कि समाज को उनके दिखाए मार्ग पर चलकर आगे बढ़ना चाहिए। राज्यमंत्री ने जनपद मुख्यालय पर शीघ्र डा. रत्नप्पा कुम्हार की प्रतिमा स्थापित कराने का आश्वासन दिया। समारोह में वक्ताओं ने उनके जीवन और योगदान पर प्रकाश डाला। इस दौरान मेधावी छात्र–छात्राओं तथा समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को प्रतिभा सम्मान से नवाजा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष राहुल प्रजापति ने की। संचालन डा. महेंद्र प्रजापति और डा. डीके प्रजापति ने किया। समारोह में बड़ी संख्या में समाज के लोग और महिलाएं मौजूद रहीं।

ओजोन संरक्षण हमारी वैश्विक जिम्मेदारी - डॉ श्रावण कुमार

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) भौतिक विज्ञान संस्थान के रसायन विज्ञान विभाग में बुधवार को विश्व ओजोन दिवस के अवसर पर क्विज प्रतियोगिता और आमंत्रित व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस वर्ष की थीम 'ग्लोबल एक्शन फॉर कूलर प्लेनेट' पर आधारित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को ओजोन परत के महत्व और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

मुख्य वक्ता भू एवं गृह विज्ञान विभाग के डॉ. श्रवण कुमार ने कहा कि पृथ्वी को हानिकारक पराबैंगनी किरणों से बचाने में ओजोन परत की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने बताया कि क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) जैसे रसायनों के कारण ओजोन परत को नुकसान पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि ओजोन संरक्षण केवल किसी एक देश की नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की जिम्मेदारी है। युवाओं को पर्यावरण सुरक्षा के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर पहल करनी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान केमिकल कम्युनिकेशन सोसाइटी की ओर से क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें विद्यार्थियों ने ओजोन परत, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े प्रश्नों के उत्तर दिए। प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. मिथिलेश सिंह और रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. प्रमोद कुमार ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण को केवल एक दिवस तक सीमित न रखते हुए इसे दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन विनायक श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नितेश जायसवाल ने किया। इस अवसर पर डॉ. मिथिलेश यादव, डॉ. दिनेश वर्मा, सुजीत चौरसिया सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

रामलला के दर्शन के बाद हनुमानगढ़ी पहुंचे दिल्ली के उपराज्यपाल तरणजीत सिंह संधू

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या। दिल्ली के उपराज्यपाल तरणजीत सिंह संधू बुधवार को रामलला के दर्शन के लिए अयोध्या पहुंचे। महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर उनका स्वागत किया गया,जिसके बाद वह राम जन्मभूमि परिसर पहुंचे और विधि–विधान से रामलला का दर्शन–पूजन कर आशीर्वाद लिया।मीडिया से बातचीत में उपराज्यपाल ने कहा कि वह रामलला के दरबार में मत्था टेकने आए हैं और रामलला के दर्शन करना उनका सौभाग्य है। उन्होंने अयोध्या के विकास की सराहना करते हुए कहा कि अयोध्या बहुत सुंदर नगरी बन रही है।इसके बाद उपराज्यपाल ने हनुमानगढ़ी पहुंचकर हनुमान जी महाराज के दर्शन किए और आशीर्वाद प्राप्त किया। दर्शन के उपरांत राष्ट्रीय प्रवक्ता अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष संकट मोचन सेना पूज्य महंत श्री संजय दास जी महाराज तथा वरिष्ठ पुजारी हनुमानगढ़ी एवं श्रृंगी ऋषि पीठाधीश्वर महंत श्री हेमंत दास जी महाराज ने उन्हें हनुमान जी महाराज की प्रतिमा, हस्तशिल्पी हनुमान चालीसा एवं रामनामा भेंट किया।

अयोध्या में बनेगा एनएसजी का रीजनल हब, 65 एकड़ भूमि होगी निःशुल्क हस्तांतरित

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या। रामनगरी की सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत एवं आधुनिक बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है।अयोध्या में एनएसजी का रीजनल हब स्थापित किया जाएगा।इसके लिए मिल्कीपुर तहसील के ग्राम पूरे लालखां में 26 हेक्टेयर (लगभग 65 एकड़) बंजर भूमि गृह मंत्रालय के पक्ष में निःशुल्क हस्तांतरित किए जाने के प्रस्ताव को योगी कैबिनेट ने मंजूरी दे दी है।रीजनल हब के स्थापित होने से अयोध्या में एनएसजी कमांडो तथा आधुनिक सुरक्षा संसाधनों की उपलब्धता बढ़ने की उम्मीद है।इससे किसी भी गंभीर सुरक्षा चुनौती की स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया और न्यूनतम रिस्पांस टाइम को मजबूत करने में मदद मिलेगी। अयोध्या के साथ आसपास के संवेदनशील क्षेत्रों में भी आवश्यकता पड़ने पर

एनएसजी की पहुंच और कार्रवाई अधिक प्रभावी हो सकेगी।रीजनल हब के संचालन के लिए आवश्यक आधारभूत ढांचा विकसित किया जाएगा। वहीं, कैंट क्षेत्र के मीरनघाट में करीब 8 एकड़ नजूल भूमि पहले ही एनएसजी सेंटर के लिए उपलब्ध कराई जा चुकी है,जहां निर्माण प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।राम मंदिर के निर्माण के बाद अयोध्या में बढ़ती धार्मिक, सांस्कृतिक और अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों के बीच सुरक्षा व्यवस्था के आधुनिकीकरण की दिशा में एनएसजी रीजनल हब को महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

धान में फाल्स स्मट से बचाव को किसान बरतें सतर्कता ,बाली निकलने के समय विशेष निगरानी जरूरी डॉ . पंकज कुमार सिंह

ब्यूरो चीफ .. आलोक कुमार श्रीवास्तव

सुलतानपुर। धान की खड़ी फसल में इन दिनों फाल्स स्मट (कंडुआ रोग), जिसे स्थानीय स्तर पर हल्दी रोग भी कहा जाता है, के प्रकोप की आशंका को देखते हुए किसानों को विशेष सतर्कता बरतने की जरूरत है। वर्तमान समय में कई क्षेत्रों में धान की फसल बाली निकलने और पुष्पीकरण की अवस्था में है। लगातार बारिश और वातावरण में अधिक नमी रोग के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर सकती हैं। आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र बरासिन, द्वितीय के सस्य वैज्ञानिक डॉ. पंकज कुमार सिंह ने बताया कि फाल्स स्मट रोग Ustilaginoidea अपदने नामक कवक से होता है। रोगग्रस्त बालियों में कुछ दानों के स्थान पर पीले–नारंगी रंग के गोलाकार कवकीय पिंड दिखाई देते हैं, जो बाद में गहरे हरे से काले रंग के हो जाते हैं। इससे धान की गुणवत्ता प्रभावित होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि खेत में बाली निकलने के समय नियमित निरीक्षण करें। अनावश्यक जलभराव से बचें और नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का जरूरत से ज्यादा प्रयोग न करें। संतुलित पोषण प्रबंधन अपनाएं। संक्रमित बालियां दिखाई देने पर उन्हें सावधानीपूर्वक निकालकर खेत से बाहर नष्ट करें तथा फसल अवशेषों को खेत में न छोड़ें। डॉ. सिंह के अनुसार रासायनिक नियंत्रण के लिए बाली निकलने से पूर्व अथवा प्रारंभिक बूटिंग अवस्था में प्रोपिकोनाजोल 25: ᵐ की 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव किया जा सकता है। आवश्यकता होने पर 7दृ10 दिन बाद दूसरा छिड़काव किया जा सकता है। विकल्प के रूप में मैनकोजेब 75: ˘च की 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से प्रयोग किया जा सकता है। दवा का प्रयोग फसल की अवस्था, लेबल निर्देश और स्थानीय कृषि विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार ही करें। उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण स्पष्ट दिखाई देने के बाद संक्रमित दानों को सामान्य दानों में बदलना संभव नहीं होता। इसलिए रोकथाम के लिए सही समय पर फफूंदनाशी का प्रयोग अधिक प्रभावी है। नियमित खेत निरीक्षण, संतुलित पोषण, उचित जल प्रबंधन, संक्रमित बालियों को हटाने और समय पर रोग नियंत्रण उपाय अपनाकर किसान फाल्स स्मट से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

बाजारवाद की भीड़ में भी अडिग हैं कम संसाधन वाले सम्पादक - प्रो. मनोज मिश्र

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। वर्तमान परिवेश बाजारवाद का हो गया है लेकिन

इसी में अपने आपको बचाकर समाचार पत्र निकालना रेंत में पानी निकालने के बराबर वाली बात है। उक्त बातें सम्पादक मण्डल (जौनपुर) उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस समारोह को सम्बोधित करते हुये प्रो. मनोज मिश्र संकायाध्यक्ष सामाजिक विज्ञान संकाय पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर ने बतौर मुख्य अतिथि कही। आज सुरसा के मुंह की तरह बढ़ रहे एआई से दूर रहने की अपील करते हुये उन्होंने कहा कि समाचार पत्र के सम्पादक को एक अखबार निकालने में कितनी विषम परिस्थितियों का सामना करता है, वह वही जान सकते हैं। जहां बड़ी मछली छोटी को निगलने के लिये हमेशा तैयार खड़ी हो, उस संघर्ष के दौर में भी आप अडिग हैं, क्योंकि यह आपका पैशन है, फैशन नहीं है जो 6 महीने में बदल जाय। इसी क्रम में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. आरएन त्रिपाठी पूर्व सदस्य लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश ने एक कलमकार की क्या हैसियत होती है, उसके बारे में बताते हुये उन्होंने देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के कार्यकाल के दौरान एक पत्रकार के कलम की ताकत को बताया। इसके पहले मुख्य अतिथि प्रो. मनोज मिश्र, कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. आरएन त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि प्रो. जेपी सिंह एसोसिएट प्रोफेसर टीडीपीजी कालेज, समाजसेवीध्व्यवसायी विनीत सेठ, जफराबाद चेयरमैन के प्रतिनिधि डा. सरफराज खान ने मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुये दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इसके बाद सम्पादक मण्डल के अध्यक्ष राकेशकान्त पाण्डेय, संरक्षक शम्भू सिंह, महासचिव डा. नौशाद अली, विरेन्द्र सिंह, शुभांशू जायसवाल सहित अन्य सम्पादकों ने अतिथियों को बुकें भेंट किया। तत्पश्चात संरक्षक रामजी जायसवाल ने स्थापना दिवस के जीवन पर प्रकाश डालते हुये स्वागत भाषण किया जिसके बाद सम्पादक अरूण सिंह सहित अन्य वक्ताओं ने अपना विचार व्यक्त किया। इस दौरान सम्पादक मण्डल के मंगला प्रसाद तिवारी, मो. रऊफ, छोटे लाल सिंह, महेन्द्र प्रजापति सहित अन्य लोगों ने अतिथियों को माल्यार्पण करते हुये स्मृति चिन्ह भेंट किया। इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि प्रो. जेपी सिंह ने कहा कि समाचार पत्र समाज का आईना होता है लेकिन आज कुछ लोग उसे धूमिल करने पर तूले हैं। ऐसे में सम्पादकों की जिम्मेदारी बनती है कि समाचार पत्र की पवित्रता को बनाये रखें।

चित्रांश सेवा ट्रस्ट की बैठक सम्पन्न

अयोध्या।चित्रांश सेवा ट्रस्ट की बैठक उपाध्यक्ष विकास सिन्हा के आवास पर आयोजित हुई।बैठक में सर्वसम्मति से मंदिर एवं यात्री निवास से संबंधित कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।बैठक में चित्रगुप्त मंदिर, हैदरगंज, अयोध्या कैंट के लिए मार्गदर्शक मंडल का गठन किया गया।इसमें वरिष्ठ ट्रस्टी अविनाश चंद्रा,विचारक बलदाऊ, पूर्व चिकित्सा अधिकारी डॉ. मीरा श्रीवास्तव, पूर्व आईएएस अरुण कुमार सिन्हा,ज्योतिपत राम,पूर्व दूरसंचार अधिकारी एवं समाजसेवी विजय प्रकाश श्रीवास्तव तथा नोएडा के उद्योगपति एवं समाजसेवी सतीश श्रीवास्तव को मार्गदर्शक मनोनीत किया गया।

मंदिर परिसर में नवनिर्मित यात्री निवास का नाम 'चित्रगुप्त यात्री निवास' रखने का निर्णय लिया गया।इसके साथ ही मंदिर में साफ–सफाई व्यवस्था के लिए कर्मचारी नियुक्त करने तथा धर्मशाला में आवश्यक सुविधाएं शीघ्र उपलब्ध कराने पर सहमति बनी, ताकि यात्री निवास को जल्द ही यात्रियों के लिए खोला जा सके।बैठक में पर्यटन मंत्री से समय लेकर यात्री निवास के उद्घाटन की तिथि निर्धारित करने का भी निर्णय लिया गया।सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए।इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष के.सी. श्रीवास्तव ने कहा कि नवनिर्मित यात्री निवास को लेकर ट्रस्ट के सहयोगियों में उत्साह है।उन्होंने बताया कि सतीश श्रीवास्तव ने सबसे पहले यात्री निवास के लिए एक डबल बेड उपलब्ध कराने का संकल्प लिया है।बैठक में विकास सिन्हा,अविनाश चंद्रा,कैलाश लाल श्रीवास्तव,सुरेश चंद्र श्रीवास्तव,शैलेश कुमार श्रीवास्तव,शिवशंकर श्रीवास्तव, राकेश श्रीवास्तव,रविन्द्र विक्रम श्रीवास्तव,वीरेंद्र श्रीवास्तव, विजय कुमार श्रीवास्तव,सचिन शंकर सहित ट्रस्ट के अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

फरियादियों को न्याय व अराजक तत्वों पर भी रहेगी मीरनघाट चौकी प्रभारी किरन पाल की पैनी नजर

अयोध्या।जिले में कानून–व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए एसएसपी डॉ. गौरव ग्रोवर ने हाल ही में 32 उप निरीक्षकों को चौकी प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी है।इनमें तीन महिला उप निरीक्षकों को भी चौकी की कमान सौपी है।जिसमे तेज तर्रार अनुभवी उप निरीक्षक किरन पाल भी शामिल हैं।चौकी प्रभारी मीरनघाट की जिम्मेदारी मिलने के बाद किरन पाल ने अपनी प्राथमिकताएं स्पष्ट करते हुए कहा कि महिलाओं और बेटियों की सुरक्षा के साथ फरियादियों को त्वरित न्याय दिलाना उनकी पहली प्राथमिकता होगी।बताया कि प्रयास रहेगा कि चौकी पर आने वाले प्रत्येक फरियादी की समस्या को गंभीरता से सुना जाए और नियमानुसार प्रभावी एवं समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित हो।बताया कि केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही मिशन शक्ति फेज–5 मुहिम को क्षेत्र में प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाया जाएगा।महिलाओं और छात्राओं को सुरक्षा उपायों, हेल्पलाइन तथा सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के प्रति जागरूक करने के लिए पुलिस टीम के साथ लगातार संपर्क और जागरूकता अभियान चलाया जायेगा।नवागत चौकी प्रभारी मीरनघाट किरन पाल ने बताया कि क्षेत्र के स्कूल, कॉलेज और कोचिंग संस्थानों के आसपास समय–समय पर चेकिंग अभियान चलाया जाएगा।छात्राओं को परेशान करने वाले अराजक तत्वों और संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखते हुए नियमानुसार कार्रवाई की

जाएगी।इसके साथ ही क्षेत्र में लगातार भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया जाएगा।वही वहाँ के लोगों ने बताया कि नवागत चौकी प्रभारी किरण पाल के आने से क्षेत्र में भी उम्मीद है कि महिला सुरक्षा, त्वरित पुलिस सहायता और फरियादियों की समस्याओं के निस्तारण को और मजबूती मिलेगी।

हनुमान अंश' फिल्म देखने के बाद भाजपा पदाधिकारियों ने मनोज श्रीवास्तव के साथ किया हनुमान चालीसा पाठ

अयोध्या।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस से एक दिन पहले बुधवार को लखनऊ उत्तर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने प्रोमिनेंट मॉल में 'हनुमान अंश' फिल्म देखी।इसके बाद उन्होंने सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना की।कार्यक्रम में भाजपा मंडल अध्यक्ष चंद्रशेखर गुप्ता, मंडल उपाध्यक्ष एवं संयोजक विशाल श्रीवास्तव समेत कई पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे। आयोजकों ने कार्यक्रम में सहयोग के लिए भारतीय केसरिया वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं समाजसेवी मनोज श्रीवास्तव का आभार जताया।वक्ताओं ने कहा कि हनुमान जी भारतीय संस्कृति और आस्था के प्रमुख प्रतीक हैं। उनके जीवन से शक्ति, सेवा, समर्पण और विनम्रता की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि फिल्म के माध्यम से इन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक भावनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।कार्यक्रम में देवा, अनिल, सत्येंद्र, धनंजय, प्रेम और दिनेश समेत बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए।आयोजकों ने कहा कि ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम युवाओं को भारतीय संस्कृति, संस्कारों और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ने में सहायक हो सकते हैं।

डीडीयू–जीकेवाई प्रशिक्षण केंद्र लखनऊ में नर्सिंग के प्रथम बैच के प्रशिक्षणार्थियों को टीएलएम किट का वितरण

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के अंतर्गत एजुकेटर एक्स्ट्राऑर्डिनरी लिमिटेड संस्था द्वारा संचालित प्रशिक्षण केंद्र, जेपी मॉडल पब्लिक कॉलेज, डूडा कॉलोनी, पारा, लखनऊ में आज नर्सिंग के प्रथम बैच के प्रशिक्षणार्थियों को टीएलएम किट का वितरण किया गया। इस टीएलएम किट में प्रशिक्षणार्थियों के लिए ड्रेस, बैग, पुस्तकें, पहचान पत्र एवं नोटबुक प्रदान की गई। किट प्राप्त कर प्रशिक्षणार्थियों में काफी उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर एजुकेटर एक्स्ट्राऑर्डिनरी लिमिटेड के निदेशक अभिनव बालियान तथा जीडीसीटी ग्रुप के निदेशक अभियंता पी. कुमार यादव जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में केंद्र प्रबंधक श्री संतोष मौर्या सहित प्रशिक्षण केंद्र के सभी कर्मचारी एवं स्टाफ

सदस्य मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को नर्सिंग प्रशिक्षण को गंभीरता एवं अनुशासन के साथ पूरा करने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद उपलब्ध रोजगार एवं करियर के अवसरों के बारे में भी जानकारी दी गई। प्रशिक्षणार्थियों को बताया गया कि केवल प्रशिक्षण प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि अनुशासन, मेहनत, सकारात्मक सोच, निरंतर सीखने की आदत और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण के साथ जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है। कार्यक्रम के अंत में प्रशिक्षणार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा गया कि वे इस अवसर का पूरा लाभ उठाएं और अपने कौशल के माध्यम से अपने परिवार एवं समाज का नाम रोशन करें।

मेडिकल कॉलेज जौनपुर में मार्टिनगंज, आजमगढ़ निवासी 54 वर्षीय मरीज के ब्लैडर मास का सफल अश्परेशन

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, जौनपुर में मार्टिनगंज, जनपद आजमगढ़ निवासी 54 वर्षीय मरीज के ब्लैडर में पाए गए मास का सफल ऑपरेशन किया गया। यह ऑपरेशन यूरोलॉजी विभाग के चिकित्सक डॉ. हिमांशु सिंह द्वारा विशेषज्ञ चिकित्सकीय टीम के डा0 अभिषेक मिश्रा, डा0 इमरान, डा0 अकांक्षा, डा0 राजन्य प्रजापति के सहयोग से सफलता पूर्वक किया गया।

मरीज को ब्लैडर संबंधी समस्या के कारण चिकित्सा महाविद्यालय में भर्ती कराया गया था। आवश्यक जांचों के उपरांत ब्लैडर में मास पाए जाने पर चिकित्सकों द्वारा ऑपरेशन करने का निर्णय लिया गया। निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ऑपरेशन सफलतापूर्वक संपन्न किया गया तथा मरीज की स्थिति वर्तमान में स्थिर बताई गई है।

चिकित्सकों के अनुसार ब्लैडर के अंदर पाए जाने वाले मासध्ट्यूमर की स्थिति का आकलन करने तथा आवश्यकतानुसार उसे हटाने के लिए ट्रांसयूरेथ्रल रीसैक्शन ऑफ ब्लैडर ट्यूमर (ज्त्ठज) जैसी प्रक्रिया की जाती है, जिसमें पेट पर चीरा लगाए बिना मूत्रमार्ग के रास्ते उपकरण द्वारा ब्लैडर के अंदर की असामान्य वृद्धि को हटाया जाता है।

इस सफल ऑपरेशन पर प्रधानाचार्य प्रो0 (डॉ0) आर0बी0 कमल ने चिकित्सकीय टीम को बधाई देते हुए कहा कि चिकित्सा महाविद्यालय में मरीजों को गुणवत्तापूर्ण एवं विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए संस्थान निरंतर प्रयासरत है।

स्टोर मैनेजर पर लोहे की रॉड से जानलेवा हमला, जिला अस्पताल में भर्ती

अयोध्या।हैरिंग्टनगंज चौकी क्षेत्र के आदिलपुर पूरे पराग पंडित निवासी सुभाष गोस्वामी पुत्र स्वर्गीय राम कुमार पर बुधवार सुबह कथित रूप से लोहे की रॉड से जानलेवा हमला किया गया।घटना में वह गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें जिला अस्पताल की इमरजेंसी में भर्ती कराया गया है।मिली जानकारी के मुताबिक सुभाष गोस्वामी फैजाबाद स्थित एक बाइक सवार एक कंपनी मे स्टोर मैनेजर हैं।बुधवार सुबह करीब सात बजे वह बाइक से अपने कार्यालय जा रहे थे।शाहगंज से आगे बारुन मार्ग पर पहुंचते ही होंडा शाइन बाइक सवार दो युवकों ने उन्हें रोककर लोहे की रॉड से हमला कर दिया।हमले में वह घायल होकर सड़क पर गिर पड़े।घटना के बाद पीड़ित को उपचार के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया गया।मामले में पीड़ित ने इनायतनगर थाने में एक नामजद तथा एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ तहरीर दी है।पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

छात्रसंघ चुनाव की मांग को लेकर एबीवीपी ने सौंपा ज्ञापन

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या।अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) की साकेत महाविद्यालय इकाई ने छात्रहित से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के समाधान और छात्रसंघ चुनाव कराने की मांग को लेकर महाविद्यालय के प्राचार्य को 11 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा।वहीं, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय इकाई ने कुलसचिव को चार सूत्रीय मांगपत्र देकर विद्यार्थियों की समस्याओं के शीघ्र निस्तारण की मांग की।प्रांत सह मंत्री शिवम मिश्र ने कहा कि महाविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव नहीं होने से विद्यार्थियों में निराशा है।उन्होंने आगामी सत्र में छात्रसंघ चुनाव कराकर विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक तरीके से अपना प्रतिनिधि चुनने का अवसर देने की मांग की। साथ ही छात्रसंघ भवन की मरम्मत और छात्र–छात्राओं के लिए आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध कराने की मांग रखी गई।विभाग संयोजक शशांक विद्यार्थी ने परिसर में पेयजल की समुचित व्यवस्था, खराब वाटर कूलरों की मरम्मत अथवा अतिरिक्त वाटर कूलर लगाने, शौचालय एवं मूत्रालय की व्यवस्था दुरुस्त करने तथा नियमित साफ–सफाई और पंखों की व्यवस्था सुनिश्चित कराने की मांग की।इकाई मंत्री विकास यादव ने परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों के वाहनों को सुरक्षित खड़ा कराने, परीक्षा परिणाम एवं उपस्थिति से जुड़ी तकनीकी समस्याओं का समाधान करने तथा माइनर विषयों की फीस बिना पूर्व सूचना लिए जाने के संबंध में आपत्ति दर्ज कराई।इकाई अध्यक्ष नीलम गोस्वामी ने महाविद्यालय परिसर की सुरक्षा एवं अनुशासन व्यवस्था का मुद्दा उठाते हुए बाहरी एवं अराजक तत्वों के प्रवेश पर रोक लगाने तथा विद्यार्थियों में भय का माहौल समाप्त करने के लिए आवश्यक कार्रवाई की मांग की। परिषद ने महाविद्यालय प्रशासन को 15 दिन के भीतर समस्याओं के समाधान की मांग की है।वहीं, अवध विश्वविद्यालय इकाई ने कुलसचिव को सौंपे चार सूत्रीय ज्ञापन में परीक्षा परिणाम एवं उपस्थिति से संबंधित तकनीकी समस्याओं का शीघ्र समाधान, परिसर में पेयजल व वॉशरूम की बेहतर व्यवस्था तथा नियमित साफ–सफाई की मांग की। इसके अलावा विद्यार्थियों की कॉशन मनी वापस करने और पीएचडी प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के इंटरव्यू की तिथि जल्द घोषित करने की मांग की गई। विश्वविद्यालय प्रशासन को समस्याओं के समाधान के लिए एक सप्ताह का समय दिया गया है।छात्रसंघ उपाध्यक्ष विशाल वैश्य एवं इकाई अध्यक्ष राघवेंद्र तिवारी ने कहा कि निर्धारित समय में समस्याओं का समाधान नहीं होने पर विद्यार्थी परिषद छात्रहित में आंदोलन करने को बाध्य होगी।ज्ञापन सौंपने वालों में प्रांत सहमंत्री शिवम मिश्र, विभाग संगठन मंत्री अंकित भारतीय, महानगर संगठन मंत्री उदय मिश्र, महानगर सहमंत्री आदर्श चतुर्वेदी, अनुराग शुक्ला, किशन सिंह, देवांश आदित्य सिंह, अंशिका तिवारी, दिव्यांशु सिंह, सुधांशु सागर, राहुल ठाकुर, प्रियांशु तिवारी, अंशिका शुक्ला सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

दशरथ पथ किनारे पानी भरे गड्ढे में मिला अज्ञात युवती का शव

अयोध्या।कोतवाली अयोध्या क्षेत्र के दशरथ पथ के किनारे पानी भरे गड्ढे में बुधवार को एक अज्ञात युवती का शव मिलने से सनसनी फैल गई।शव के गले पर चोट के निशान बताए जा रहे हैं।युवती के पास से एक बैग भी बरामद हुआ है।सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त कराने का प्रयास शुरू कर दिया।गले पर चोट के निशान मिलने के कारण पुलिस हत्या समेत विभिन्न पहलुओं पर जांच कर रही है। फिलहाल युवती की पहचान नहीं हो सकी है।अयोध्या पुलिस आसपास के लोगों से पूछताछ करने के साथ ही शव की शिनाख्त कराने में जुटी है।पुलिस के मुताबिक मौत का वास्तविक कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद स्पष्ट होगा।

किसानों को मिलेगा निःशुल्क तोरिया बीज मिनीकिट

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या।जिला कृषि अधिकारी डा० सौरभ वर्मा ने बताया कि जनपद में रबी सत्र 2026–27 में निःशुल्क तोरिया बीज मिनीकिट प्राप्त करने हेतु कृषि विभाग की वेबसाइट (.हतपबनसजनतम.नच.हवअ.पद) के माध्यम तोरिया बीज मिनीकिट बुकिंग करने वाले चयनित कृषक किसी भी कार्य दिवस में अपने विकासखण्ड के राजकीय कृषि बीज भण्डार पर पहुँच कर निःशुल्क तोरिया बीज मिनीकिट (प्रजाति च्ज़– 508, जो 90 से 95 दिन की प्रजाति है तथा जिसमें लगभग 42 प्रतिशत तेल उत्पादन प्राप्त होता है) प्राप्त कर कैच काप के रूप में उसकी बुवाई करने के पश्चात उसमें गेहूँ की बुवाई करके अतिरिक्त लाभ प्राप्त करें। जिला कृषि अधिकारी ने किसान भाइयों से अपील कि वह तत्काल उक्त योजना का लाभ उठायें, साथ ही रबी 2026–27 के अन्तर्गत सामान्य अनुदान पर वितरण हेतु गेहूँ, जौ, चना, मटर व मसूर की बुकिंग कृषि विभाग की वेबसाइट पर नियमानुसार करते हुए योजना का लाभ प्राप्त करें।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी मे. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव
मो0 - 7007415808, 9415034002
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।